



EDU TERIA

Prelims Mains
Essay

E - D.N.A

Daily Newspaper Analysis

By- Nikhil Ranjan

Useful For Prelims

Date: 03 January 2026

जयपाल सिंह की कप्तानी में भारत ने हाकी में जीता पहला ओलंपिक सोना



जयपाल सिंह मुंडा का जन्म 1903 में आज ही रांची में हुआ था। उच्च शिक्षा के लिए आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी गए और वहां की हाकी टीम के एक बेहतरीन खिलाड़ी बने। 1928 में, इंग्लैंड में आइसीएस अधिकारी के रूप में प्रशिक्षण के दौरान, उन्हें एम्स्टर्डम ओलंपिक के लिए भारतीय हाकी टीम की कप्तानी का निमंत्रण मिला। अवकाश न मिलने पर, उन्होंने सिविल सेवा छोड़कर भारत के लिए हाकी स्टिक उठाई और देश को पहला ओलंपिक स्वर्ण पदक दिलाया। वे भारतीय संविधान सभा के भी सदस्य थे जहां उन्होंने आदिवासियों के अधिकारों और पहचान के लिए प्रखर आवाज उठाई।



Dainik Jagaran Page No-16

पहली बार स्पर्श को महसूस करने में सक्षम कृत्रिम हाथ लगाया गया

2018 में आज ही रोम की अल्मेरिना मस्केरेलो स्पर्श को महसूस करने में सक्षम बायोनिक हाथ प्राप्त करने वाली पहली व्यक्ति बनी थीं। इससे उन्हें अपनी बांह की नसों से जुड़े इलेक्ट्रोड की मदद से कठोरता और कोमलता जैसी संवेदनाओं को महसूस करने की क्षमता मिली।



पहली बार अमेरिका में इलेक्ट्रिक घड़ी ब्रिकी के लिए उपलब्ध हुई

1957 में आज ही पहली बार अमेरिका में इलेक्ट्रिक घड़ी, हैमिल्टन वेंदुरा को बेचा गया था। इसमें पारंपरिक मेनस्प्रिंग के बजाय बैट्री से चलने वाली विद्युत चुंबकीय प्रणाली का उपयोग करके सुइयों को चलाया गया। हालांकि बाद में क्वाटर्ज तकनीक ने इसे पीछे छोड़ दिया।



Dainik Jagaran Page No-14

साथियन और बत्रा के नेतृत्व में भारतीय दल तैयार

हिमांशु अग्निहोत्री
नई दिल्ली, 2 जनवरी।

दिग्गज खिलाड़ी जी साथियन और मनिका बत्रा के नेतृत्व में भारतीय दल दोहा में विश्व टेबल टेनिस (डब्ल्यूटीटी) स्टार कंटेंडर च ओमान में डब्ल्यूटीटी कंटेंडर मस्कट टूर्नामेंट में भाग लेगा।

दोहा में होने वाला डब्ल्यूटीटी स्टार कंटेंडर टूर्नामेंट 13 से 18 जनवरी तक आयोजित होगा, जिसमें भारत का 18 सदस्यीय दल हिस्सा लेगा। दल में छह पुरुष, छह महिला खिलाड़ी, तीन कोच और तीन टीम सदस्य शामिल हैं।

सूत्रों के मुताबिक, खेल मंत्रालय के तहत स्पोर्ट्स अथॉरिटी आफ इंडिया (साई) ने टीम को मजबूत समर्थन प्रदान करते हुए ओमान और

दोहा में होने वाला डब्ल्यूटीटी स्टार कंटेंडर टूर्नामेंट 13 से 18 जनवरी तक आयोजित होगा, जिसमें भारत का 18 सदस्यीय दल हिस्सा लेगा। दल में छह पुरुष, छह महिला खिलाड़ी, तीन कोच और तीन टीम सदस्य शामिल हैं।



ओमान में 19 से 24 जनवरी तक आयोजित डब्ल्यूटीटी कंटेंडर मस्कट टूर्नामेंट में भारतीय दल के कुल 18 सदस्य शामिल होंगे। इनमें छह पुरुष खिलाड़ी, छह महिला खिलाड़ी, तीन कोच और तीन टीम सदस्य हैं।

खिलाड़ियों की सूची

पुरुष खिलाड़ी : मानव टक्कर, जी साथियन, मानुष शाह, पायस जैन, आकाश पाल, अंकुर भट्टाचार्य।

महिला खिलाड़ी : मनिका बत्रा, दिया चितले, यशरिक्नी घोरपड़े, स्वस्तिका घोष, अयहिका मुखर्जी, तनीषा कोटेवा।

मनिका बत्रा अपने फिजियो और प्रैक्टिस पार्टनर के साथ शामिल होंगी, लेकिन उनका खर्च वे स्वयं वहन करेंगी।

दूसरी ओर, ओमान में 19 से 24 जनवरी तक आयोजित डब्ल्यूटीटी कंटेंडर मस्कट टूर्नामेंट में भारतीय दल के कुल 18 सदस्य शामिल होंगे। इनमें छह पुरुष खिलाड़ी, छह महिला खिलाड़ी, तीन कोच और तीन टीम सदस्य हैं।

साई द्वारा मुहैया कराए जा रहे लगभग 40 लाख रुपए के खर्च में हवाई यात्रा, ट्रेवल इश्योरेंस, चीजा फीस और आवास शामिल हैं। यह टूर्नामेंट टीम के लिए महत्वपूर्ण अभ्यास का अवसर प्रदान करेगा, जहां वे अपनी रणनीतियों को परख सकेंगे। हालांकि, टूर्नामेंट में भाग लेने वाले कुछ प्रमुख खिलाड़ी टाप्स योजना के अंतर्गत हैं।

दोहा में होने वाले टूर्नामेंटों के लिए कुल 75 लाख रुपए का बजट आवंटित किया है। यह कदम राष्ट्रमंडल खेलों और एशियाई खेलों की

तैयारी के तहत उठाया गया है, जहां टीम से पदकों की उम्मीद की जा रही है। दोहा में यात्रा का खर्च 35 लाख रुपए है। स्टार खिलाड़ी

खोज

पाकिस्तानी पुरातत्वविदों को तक्षशिला के पास यूनेस्को-सूचीबद्ध स्थल पर खुदाई में पत्थर भी मिले

पाकिस्तान में कुषाण वंश से संबंधित दुर्लभ कांस्य सिक्के मिले

इस्लामाबाद, 2 जनवरी (भाषा)।

पाकिस्तान के पुरातत्वविदों को ऐतिहासिक शहर तक्षशिला के पास यूनेस्को-सूचीबद्ध स्थल की खुदाई के दौरान दुर्लभ सजावटी पत्थर और सिक्के के साथ कुषाण वंश से संबंधित दुर्लभ कांस्य के सिक्के मिले हैं। इससे प्राचीन गांधार के भौतिक इतिहास को एक नया आयाम मिलेगा साथ ही प्राचीन सभ्यता की सबसे प्रारंभिक शहरी बस्ती की एक दुर्लभ झलक भी मिलती है। पुरातात्विक महत्व की ये वस्तुएं प्राचीन भीर टोले पर मिली हैं। विशेषज्ञों ने ईसा पूर्व छठी शताब्दी के सजावटी पत्थर और दूसरी शताब्दी के सिक्के बरामद किए।

पाकिस्तान के समाचार पत्र 'डान' ने अपनी एक खबर में कहा कि अधिकारियों ने इस खोज

उत्खनन दल के प्रमुख डोगर ने कहा सजावटी पत्थर लैपिस लाजुली हैं जो एक बहुमूल्य पत्थर है, जबकि सिक्के कुषाण काल के हैं। डोगर ने बताया कि पेशावर विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा किए गए विस्तृत मुद्रा विश्लेषण से पृष्टि हुई है कि सिक्कों पर सम्राट वासुदेव की छवि अंकित है। **इतिहासकार** वासुदेव को इस क्षेत्र पर शासन करने वाले अंतिम कुषाण शासक मानते हैं। डोगर ने कहा, 'कनिष्क जैसे सम्राटों के शासनकाल में तक्षशिला एक प्रमुख प्रशासनिक, वाणिज्यिक और बौद्धिक केंद्र के रूप में उभरा।

को एक दशक में इस स्थल पर हुई सबसे अहम खोज बताया है। पंजाब पुरातत्व विभाग के उप निदेशक आसिम डोगर ने कलाकृतियों के प्रारंभिक विश्लेषण की पृष्टि की। डोगर उत्खनन दल के प्रमुख हैं। उन्होंने कहा, सजावटी पत्थर लैपिस लाजुली हैं जो एक बहुमूल्य पत्थर है, जबकि सिक्के कुषाण काल के हैं। उत्खनन दल

ने धातु की कलाकृतियों की आयु निर्धारित करने के लिए विशेष फोरेंसिक सहायता ली। डोगर ने बताया कि पेशावर विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा किए गए विस्तृत मुद्रा विश्लेषण से पृष्टि हुई है कि सिक्कों पर सम्राट वासुदेव की छवि अंकित है। इतिहासकार वासुदेव को इस क्षेत्र पर शासन करने वाले अंतिम 'कुषाण शासक' मानते

हैं। डोगर ने कहा कि आसपास के पुरातात्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि ये अवशेष आवासीय क्षेत्र थे। ये नवीनतम खोजें इस बात की पृष्टि करती हैं कि कुषाण शासन के दौरान तक्षशिला अपने राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव के चरम पर था।

डोगर ने कहा, कनिष्क जैसे सम्राटों के शासनकाल में तक्षशिला एक प्रमुख प्रशासनिक, वाणिज्यिक और बौद्धिक केंद्र के रूप में उभरा। उन्होंने कहा कि इस युग में बौद्ध धर्म को कुषाण काल का व्यापक संरक्षण मिलने के कारण रत्नों, मटों और विशाल धार्मिक परिसरों का निर्माण हुआ। प्रसिद्ध मुद्राशास्त्री मलिक ताहिर सुलेमान ने कहा कि कुषाणकालीन सिक्के प्राचीन दक्षिण और मध्य एशिया को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोतों में से एक हैं।

निवेश जुटाने में आंध्र सबसे आगे

शाइन जेकब
चेन्नई, 2 जनवरी

निवेश जुटाने के मामले में आंध्र प्रदेश ने मजबूत पहचान बना ली है। बैंक ऑफ बड़ौदा की एक रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2026 के पहले नौ महीनों में राष्ट्रीय स्तर पर आए कुल निवेश प्रस्तावों में 25.3 फीसदी आंध्र प्रदेश ने अपने नाम कर लिया।

एक सरकारी बयान में कहा गया है कि आंध्र प्रदेश अब ओडिशा (13.1 फीसदी) और महाराष्ट्र (12.8 फीसदी) जैसे राज्यों से काफी आगे निकल गया है। यह भारत में औद्योगिक और निवेश के लिहाज पूर्वी और दक्षिणी हिस्से की तरफ हुए झुकाव का स्पष्ट संकेत है।

रिपोर्ट में इस बात का जिक्र है कि भारत में कुल प्रस्तावित पूंजी निवेश के आधे से अधिक हिस्से (51.2 फीसदी) पर अब तीन राज्यों यानी आंध्र प्रदेश, ओडिशा और महाराष्ट्र ने कब्जा जमा लिया है। इनमें आंध्र प्रदेश स्पष्ट रूप से सबसे आगे



■ वित्त वर्ष 2026 के पहले नौ महीनों में राष्ट्रीय स्तर पर आए कुल निवेश प्रस्तावों में 25.3 फीसदी हिस्सा अपने नाम किया

■ ओडिशा (13.1 फीसदी) और महाराष्ट्र (12.8 फीसदी) जैसे राज्यों से काफी आगे निकला

चल रहा है। कुल मिलाकर, चालू वित्त वर्ष के पहले नौ महीनों के दौरान देश भर में कुल 26.6 लाख करोड़ रुपये के निवेश संबंधी घोषणाएं हुईं जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 11.5 फीसदी अधिक है।

सोशल मीडिया 'एक्स' पर इस उपलब्धि के बारे में राज्य के

आईटी, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार, मानव संसाधन विकास और आरटीजी मंत्री नारा लोकेश ने कहा, 'आंध्र प्रदेश किसी दूसरे राज्य से होड़ नहीं कर रहा है बल्कि आगे चल रहा है। यह लगातार सुधारों, निर्णय लेने में तेजी और निवेशकों के प्रति एक स्पष्ट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। राज्य सरकार एक स्थिर नीतिगत माहौल तैयार कर उद्योग समूहों को बड़े पैमाने पर सक्षम बनाकर वास्तविक विकास करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।'

राज्य सरकार ने इस प्रदर्शन का श्रेय राज्य में निवेशकों के अनुकूल कामकाज, कारोबार से जुड़े प्रस्तावों को त्वरित मंजूरी देने की प्रक्रिया और बंदरगाहों, लॉजिस्टिक, ऊर्जा एवं डिजिटल ढांचा क्षेत्रों में मजबूत बुनियादी विकास को दिया।

उद्योग जगत पर नजर रखने वाले लोगों का कहना है कि राष्ट्रीय स्तर पर निवेश प्रस्तावों में राज्य की बढ़ती हिस्सेदारी भारत में आर्थिक तरक्की में राज्यों के बदलते योगदान का संकेत दे रहा है।

वाहन कलपुर्जा उद्योग में क्षमता बढ़ाने पर जोर

सोहिनी दास
मुंबई, 2 जनवरी

भारत में वाहनों के कलपुर्जे बनाने वाली कंपनियों क्षमता विस्तार के एक नए दौर में प्रवेश कर रही हैं। इसकी वजह महज बिक्री वृद्धि नहीं बल्कि इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी), सुरक्षा प्रणालियों और प्रति वाहन ज्यादा इलेक्ट्रॉनिक्स कंटेंट की ओर ढांचागत बदलाव के कारण है।

स्थानीयकरण की पहल और उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के कारण निवेश में तेजी आ रही है। यह तब है जब वैश्विक कारोबार में अनिश्चितता के बीच निर्यात कारोबारी सतर्क बने हुए हैं। देवेन चोकसी रिसर्च की एक रिपोर्ट के अनुसार वाहन कलपुर्जा उद्योग अधिक वाहन उत्पादन, बढ़ते निर्यात और प्रीमियमाइजेशन तथा इलेक्ट्रॉनिक्स की बढ़ती पैठ के कारण मजबूत वृद्धि की उम्मीद कर रहा है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि स्थानीयकरण पहल और पीएलआई के कारण हो रहे निवेश के बल पर ईवी से जुड़े कलपुर्जों और सुरक्षा प्रणालियों की मजबूत मांग बरकरार है। कंपनियां क्षमताएं बढ़ाने और मूल उपकरण निर्माता (ओईएम) जरूरतों के साथ तालमेल बिठाने के लिए तकनीकी क्षमताओं को मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित हो रही हैं।

यह बदलाव प्रमुख सहायक पुर्जा निर्माताओं में देखा जा रहा है, विशेष रूप



■ स्थानीयकरण को बढ़ावा देने और पीएलआई योजना से निवेश में आ रही तेजी

■ कंपनियां मूल उपकरण निर्माता की जरूरतों के साथ तालमेल के लिए बढ़ा रही हैं तकनीकी क्षमताएं

से इलेक्ट्रॉनिक्स, ड्राई-कास्टिंग, अलॉय व्हील्स और उन्नत सुरक्षा प्रणालियों से जुड़ी कंपनियों में जिन्हें ईवी अपनाने, प्रीमियम वाहनों और सख्त नियामकीय नियमों से सीधा फायदा होता है। इस रुझान की एक प्रमुख लाभार्थी के रूप में मिंडा कॉरपोरेशन उभरी है।

देवेन चोकसी रिसर्च का कहना है कि कंपनी रणनीतिक रूप से अपने ड्राई कास्टिंग बिजनेस को आगे बढ़ा रही है और क्षमता विस्तार कर रही है और ईवी पावरट्रेन हाउसिंग और ज्यादा -टन भार वाले कलपुर्जों पर ध्यान बढ़ा रही है। एक

और बड़ी कंपनी यूनो मिंडा, अलॉय व्हील्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, सेंसर और एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (एडीएएस) में लगातार तेजी से आगे बढ़ रही है। देवेन चोकसी रिसर्च का कहना है कि कंपनी बढ़ती ग्राहक मांग और दोपहिया और चार पहिया वाहन प्लेटफॉर्म पर बेहतर उत्पाद मिश्रण के सपोर्ट से अपने अलॉय व्हील और कास्टिंग परिचालन को बढ़ा रही है। साथ ही आने वाले ओईएम प्रोग्राम के लिए मशीनिंग कैपेसिटी का भी विस्तार कर रही है। प्रबंधन की कमेंट्री भी इस आउटलुक को मजबूत करती है। 2025-26 की दूसरी तिमाही की अर्निंग्स कॉल में यूनो मिंडा ग्रुप के सीएफओ सुनील बोहरा ने कहा कि कंपनी ओईएम की विस्तार योजनाओं और सेक्टर की दीर्घावधि वृद्धि को देखते हुए निवेश कर रही है।

मारुति सुजुकी ने 22.55 लाख वाहनों का उत्पादन किया

मारुति सुजुकी इंडिया ने कैलेंडर वर्ष 2025 में 22.55 लाख वाहनों का रिकॉर्ड वार्षिक उत्पादन दर्ज किया जो पिछले वर्ष की तुलना में 9.3 प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने शुक्रवार को बयान में कहा कि यह लगातार दूसरा वर्ष है जब कंपनी का वार्षिक उत्पादन 20 लाख वाहन के स्तर को पार कर गया है। कंपनी ने वर्ष 2024 में 20.63 लाख वाहनों का उत्पादन किया था। मारुति सुजुकी इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी हिसाशी टेकुची ने रिकॉर्ड उत्पादन का श्रेय कंपनी के कर्मचारियों के प्रयासों और आपूर्तिकर्ता साझेदारों के साथ मजबूत तालमेल को दिया। कंपनी के अनुसार 2025 में उत्पादन के लिहाज से उसके शीर्ष पांच मॉडल फ्रॉन्क्स, बलेनो, स्विफ्ट, डिजायर और आर्टिगा रहे।

भाषा

‘बुरे पड़ोसियों’ से रक्षा करने का पूरा अधिकार: जयशंकर

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को कहा कि बात जब ‘बुरे पड़ोसियों’ की आती है, तो भारत को अपने लोगों की रक्षा करने का पूरा अधिकार है। उन्होंने कहा कि अगर कोई पड़ोसी देश भारत में आतंकवाद फैलाना जारी रखता है, तो वह भारत से पानी साझा करने की मांग नहीं कर सकता। साथ ही जयशंकर ने कहा कि ‘अच्छे पड़ोसियों’ के मामले में भारत निवेश करने, मदद देने और साझा करने में कभी पीछे नहीं हटता, फिर चाहे वह कोविड-19 महामारी के दौरान टीके हों, यूक्रेन संघर्ष के दौरान ईंधन एवं खाद्य सहायता हो या श्रीलंका को उसके वित्तीय संकट के दौरान दी गई चार अरब अमेरिकी डॉलर की वित्तीय मदद हो।

विदेश मंत्री ने पाकिस्तान का नाम लिए बगैर कहा कि बात जब ‘बुरे पड़ोसियों’ की आती है, तो भारत को अपने लोगों की रक्षा करने का पूरा अधिकार है। चेन्नई में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी (आईआईटी) मद्रास के छात्रों के साथ संवाद कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए जयशंकर ने कहा, ‘भारत की प्रगति इस क्षेत्र के लिए एक सकारात्मक लहर है और हमारे अधिकांश पड़ोसी मानते हैं कि भारत की प्रगति से उनका भी विकास होता है। लेकिन जब आतंकवाद फैलाने वाले बुरे पड़ोसियों की बात आती है, तो भारत को अपने लोगों की रक्षा करने का पूरा अधिकार है और वह हर संभव कदम उठाएगा। आप हमारे देश में आतंकवाद फैलाना जारी रखते हुए हमसे पानी साझा करने का अनुरोध नहीं कर सकते।’

विदेश मंत्री ने कहा कि ऐसी स्थिति से बचने के लिए अन्य देशों के साथ संवाद करना जरूरी है, जिसमें भारत के इरादों को गलत तरीके से समझा जाए। उन्होंने कहा, ‘लोगों को आपको गलत समझने से रोकने का तरीका है संवाद करना। अगर आप अच्छी तरह, स्पष्ट रूप से और ईमानदारी से संवाद करते हैं,



आईआईटी मद्रास के छात्रों के साथ संवाद कार्यक्रम में विदेश मंत्री

तो अन्य देश और अन्य लोग इसका सम्मान करते हैं और इसे स्वीकार करते हैं।’ जयशंकर ने कहा, ‘दुनिया भर में बहुत से लोग अपनी संस्कृति, परंपरा और विरासत पर गर्व करते हैं। मुझे कोई कारण नजर नहीं आता कि हमें ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए।’ उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि प्राचीन सभ्यताओं में से ‘वास्तव में बहुत कम’ ऐसी हैं, जो प्रमुख आधुनिक राष्ट्र के रूप में उभर पाईं और भारत उनमें से एक है।

पड़ोसी देशों की मदद में भारत हमेशा आगे

जयशंकर ने कहा, ‘हमें अपने अतीत की ऐसी समझ है, जो बहुत कम देशों के पास है, लोकतांत्रिक राजनीतिक मॉडल अपनाने के हमारे फैसले ने ही लोकतंत्र के विचार को एक सार्वभौमिक राजनीतिक अवधारणा बना दिया।’ उन्होंने कहा, ‘अगर हमने वह रास्ता नहीं अपनाया होता, तो लोकतांत्रिक मॉडल, जैसा कि हम जानते हैं, क्षेत्रीय और संकीर्ण होता, पश्चिम के साथ साझेदारी भी अहम है और इसी तरह हम दुनिया को आकार देते हैं।’

जयशंकर ने कहा कि वह भारत की ओर से बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए दो दिन पहले ही ढाका गए थे। उन्होंने कहा, ‘लेकिन व्यापक रूप से, पड़ोसियों के प्रति हमारा रुख

व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित है। अच्छे पड़ोसियों के मामले में भारत निवेश करने, मदद देने और साझा करने में कभी पीछे नहीं हटता, फिर चाहे वह कोविड-19 के दौरान टीके हों, यूक्रेन संघर्ष के दौरान ईंधन एवं खाद्य सहायता हो या श्रीलंका को उसके वित्तीय संकट के दौरान दी गई चार अरब अमेरिकी डॉलर की वित्तीय मदद हो।’

आईआईटीएम ग्लोबल रिसर्च फाउंडेशन की शुरुआत

जयशंकर ने ‘आईआईटीएम ग्लोबल रिसर्च फाउंडेशन’ की भी शुरुआत की, जो आईआईटी मद्रास की एक ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय पहल है, जिसका मकसद संस्थान को शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार और उद्यमिता के लिए एक वैश्विक नेटवर्क वाले केंद्र के रूप में स्थापित करना है। उन्होंने कहा कि देशों ने घरेलू स्तर पर विकास करके और फिर विदेश में संबंध स्थापित करके प्रगति की है, जिससे अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य से लाभ हासिल किया जा सके। जयशंकर ने कहा, ‘जब हम ‘वसुधैव कुटुंबकम्’ की बात करते हैं, तो इसका मतलब यह है कि हमने दुनिया को कभी भी शत्रुतापूर्ण या प्रतिकूल स्थान नहीं माना, जिससे हमें खुद को बचाना पड़े। हमारे संसाधन सीमित हैं। सीमित संसाधनों के साथ आप अधिकतम प्रभाव कैसे डाल सकते हैं? वास्तव में यही वह समस्या है, जिसका समाधान तलाशना है।’

भाषा

विनय सिन्हा



बाजार नियामक की स्वायत्तता रहे कायम

सेबी के व्यय की सीमा तय करना और उसकी सालाना प्राप्तियों को संचित निधि को हस्तांतरित करने का प्रस्ताव एक बुरा विचार है। विस्तार से बता रहे हैं अजय त्यागी

संघर्ष के हाल ही में समाप्त हुए शीतकालीन सत्र में सरकार ने प्रतिभूति बाजारों से संबंधित कानूनों को समेकित और संशोधित करने के लिए प्रतिभूति बाजार संहिता, 2025, विधेयक पेश किया।

यह लेख विधेयक के खंड 124 पर केंद्रित है, जो भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) के वार्षिक अधिशेष सामान्य कोष को भारत की संचित निधि (सीएफआई) में हस्तांतरित करने से संबंधित है।

अब सवाल यह है कि मौजूदा प्रावधानों में प्रस्तावित परिवर्तन क्या है? इस कोष में कितना पैसा आता है और कितना जाता है? संक्षेप में कहें तो सेबी द्वारा बाजार से जुड़े अवसरचना संस्थानों, विनियमित संस्थाओं और बाजार प्रतिभागियों पर लगाए गए शुल्क और प्रभार इस फंड में आने वाले धन का हिस्सा हैं। इस फंड का उपयोग नियामक के राजस्व और पूंजीगत व्यय को पूरा करने के लिए किया जाता है। नियामक का वार्षिक बजट उसके बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया जाता है। एक वित्तीय रूप से स्वायत्त संस्था से इसी प्रकार कार्य करने की अपेक्षा की जाती है।

अब, प्रस्तावित संशोधन के अनुसार, कानून नियामक की वार्षिक निधि आवश्यकता की अधिकतम सीमा निर्धारित करता है, और अधिशेष रकम समेकित निधि को प्राप्त होगी। खंड 124 के प्रासंगिक अंश इस प्रकार हैं:

'... (3) बोर्ड एक आरक्षित निधि तैयार करेगा और किसी भी वित्त वर्ष में सामान्य कोष के वार्षिक अधिशेष का 25 फीसदी ऐसी आरक्षित निधि में जमा किया जाएगा। यह पिछले दो वित्त वर्षों के वार्षिक व्यय के योग से अधिक नहीं होगा।

(5) उप धारा (3) के अधीन वार्षिक अधिशेष के अंश को जमा करने के बाद, उस वित्त वर्ष के लिए सामान्य निधि का शेष वार्षिक अधिशेष भारत की संचित निधि में जमा किया जाएगा...'

इस खंड से संबंधित विधेयक के उद्देश्यों और कारणों का विवरण इस प्रकार है: 'विधेयक के खंड 124 में यह प्रावधान है कि भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 की धारा 14 के अंतर्गत स्थापित सामान्य कोष को संहिता के प्रयोजनों के लिए निधि माना जाएगा।' इसमें न तो नियामक द्वारा आरक्षित निधि के गठन और अधिशेष राशि को समेकित

निधि को हस्तांतरित करने के उद्देश्य का वर्णन है और न ही इसके बारे में कोई चर्चा! तो मौजूदा प्रावधानों में इस बदलाव के प्रस्ताव का तर्क क्या है? सार्वजनिक रूप से उपलब्ध टिप्पणियों से पता चलता है कि सरकार ने वर्षों से सेबी के कोष में अत्यधिक वृद्धि देखी और बजट की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इस अधिशेष को अपने पास हस्तांतरित करने के अपने अधिकार पर विचार किया, जिसके चलते यह बदलाव किया गया। कुछ लोग इसकी तुलना कुछ वर्ष पहले सरकार द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के अधिशेष कोष को समेकित निधि में हस्तांतरित करने से करते हैं। यह तर्क कई मायनों में निराधार है।

सेबी अधिनियम, 1992 के तहत सेबी के सामान्य कोष की स्थापना का तर्क काफी सीधा था- यानी नियामक को अपने खर्च पूरा करने के लिए आय अर्जित करने में सक्षम बनाना ताकि वह सरकारी अनुदानों पर निर्भर न रहे। अब स्थिति उलट गई है- सरकार नियामक से वार्षिक राजस्व प्राप्त करने की कोशिश कर रही है! विनियमित संस्थाओं पर लगाए गए शुल्क और प्रभार ही सेबी की आय का

एकमात्र स्रोत हैं, इसलिए किसी भी समय इनकी मात्रा निर्धारित करते समय नियामक का अल्प से मध्यम अवधि का अनुमानित व्यय प्रमुख कारक हो सकता है। नियामक से अपेक्षा की जाती है कि वह नियमित रूप से शुल्क और प्रभारों को समायोजित करे ताकि निधि में आने वाली राशि अनुमानित व्यय को पूरा करने के लिए पर्याप्त हो। यह स्वीकार किया जाता है कि कई बार अनुमान लगाने में सावधानी बरतने के बावजूद प्राप्ति और व्यय राशि में अंतर हो सकता है। हाल के वर्षों में सेबी की निधि में अधिशेष के बड़े पैमाने पर जमा होने का एक कारण भारत के पूंजी बाजारों में बढ़ती गतिविधि है, जिसमें प्रतिभागियों की संख्या में वृद्धि और नई संस्थाओं का प्रवेश शामिल है। इस स्थिति को सुधारने के लिए नियामक के लिए पहला कदम यह होना चाहिए था कि उचित विश्लेषण के बाद शुल्क और प्रभारों को उचित रूप से कम किया जाए और इसका लाभ विनियमित संस्थाओं को दिया जाए।

किसी भी स्थिति में बाजार नियामक द्वारा विनियमित संस्थाओं और बाजार प्रतिभागियों पर लगाए गए शुल्क और प्रभार वैध रूप से सरकार के लिए वार्षिक राजस्व का स्रोत नहीं बन सकते। ये कर या शुल्क नहीं हैं। न ही इस हस्तांतरण को सेबी द्वारा सरकार को दिया गया लाभांश माना जा सकता है। इस परिभाषा में एक बड़ी समस्या यह है कि एक बार सेबी से होने वाली आय सरकार के घाटे वाले बजट के लिए वार्षिक राजस्व का स्रोत बन जाए, तो इस तरह की प्राप्ति को साल-दर-साल बढ़ाने का लगातार दबाव बना रहेगा। यह बतुका है क्योंकि इसका अर्थ होगा- नियामक को विनियमित संस्थाओं से अधिक से अधिक आय अर्जित करने का दायित्व सौंपना ताकि सरकार का बजट चलाया जा सके। यह भी स्पष्ट नहीं है कि प्रस्तावित वार्षिक हस्तांतरण कानूनी रूप से मान्य है या नहीं।

इसके अलावा, कोई कानून किसी सांविधिक नियामक की व्यय आवश्यकताओं पर मनमाने ढंग से सीमा कैसे तय कर सकता है? फिर नियामक के सरकार से स्वतंत्र रूप से काम करने के बुनियादी और सर्वमान्य अंतरराष्ट्रीय सिद्धांत का पालन करने का भी प्रश्न उठता है। ध्यान दें कि बाजार नियामक सरकारी स्वामित्व वाली सूचीबद्ध कंपनियों की भी नियंत्रित करता है। हितों के किसी भी संभावित टकराव, या यहां तक कि इसकी

एकमात्र स्रोत हैं, इसलिए किसी भी समय इनकी मात्रा निर्धारित करते समय नियामक का अल्प से मध्यम अवधि का अनुमानित व्यय प्रमुख कारक हो सकता है। नियामक से अपेक्षा की जाती है कि वह नियमित रूप से शुल्क और प्रभारों को समायोजित करे ताकि निधि में आने वाली राशि अनुमानित व्यय को पूरा करने के लिए पर्याप्त हो। यह स्वीकार किया जाता है कि कई बार अनुमान लगाने में सावधानी बरतने के बावजूद प्राप्ति और व्यय राशि में अंतर हो सकता है। हाल के वर्षों में सेबी की निधि में अधिशेष के बड़े पैमाने पर जमा होने का एक कारण भारत के पूंजी बाजारों में बढ़ती गतिविधि है, जिसमें प्रतिभागियों की संख्या में वृद्धि और नई संस्थाओं का प्रवेश शामिल है। इस स्थिति को सुधारने के लिए नियामक के लिए पहला कदम यह होना चाहिए था कि उचित विश्लेषण के बाद शुल्क और प्रभारों को उचित रूप से कम किया जाए और इसका लाभ विनियमित संस्थाओं को दिया जाए।

किसी भी स्थिति में बाजार नियामक द्वारा विनियमित संस्थाओं और बाजार प्रतिभागियों पर लगाए गए शुल्क और प्रभार वैध रूप से सरकार के लिए वार्षिक राजस्व का स्रोत नहीं बन सकते। ये कर या शुल्क नहीं हैं। न ही इस हस्तांतरण को सेबी द्वारा सरकार को दिया गया लाभांश माना जा सकता है। इस परिभाषा में एक बड़ी समस्या यह है कि एक बार सेबी से होने वाली आय सरकार के घाटे वाले बजट के लिए वार्षिक राजस्व का स्रोत बन जाए, तो इस तरह की प्राप्ति को साल-दर-साल बढ़ाने का लगातार दबाव बना रहेगा। यह बतुका है क्योंकि इसका अर्थ होगा- नियामक को विनियमित संस्थाओं से अधिक से अधिक आय अर्जित करने का दायित्व सौंपना ताकि सरकार का बजट चलाया जा सके। यह भी स्पष्ट नहीं है कि प्रस्तावित वार्षिक हस्तांतरण कानूनी रूप से मान्य है या नहीं।

इसके अलावा, कोई कानून किसी सांविधिक नियामक की व्यय आवश्यकताओं पर मनमाने ढंग से सीमा कैसे तय कर सकता है? फिर नियामक के सरकार से स्वतंत्र रूप से काम करने के बुनियादी और सर्वमान्य अंतरराष्ट्रीय सिद्धांत का पालन करने का भी प्रश्न उठता है। ध्यान दें कि बाजार नियामक सरकारी स्वामित्व वाली सूचीबद्ध कंपनियों की भी नियंत्रित करता है। हितों के किसी भी संभावित टकराव, या यहां तक कि इसकी

आशंका से भी बचना जरूरी है। विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा अपने वित्तीय क्षेत्र आकलन कार्यक्रम रिपोर्ट में इस पर कड़ी टिप्पणी किए जाने के आसार हैं।

आरबीआई के अधिशेष फंड को समेकित निधि में हस्तांतरित करने से इसकी तुलना करना पूरी तरह से गलत है। सरकार केंद्रीय बैंक को मुद्रा छापने और जारी करके आय अर्जित करने की अनुमति देती है। आरबीआई विभिन्न वाणिज्यिक गतिविधियों और कार्यों से भी आय अर्जित करता है। आरबीआई द्वारा सरकार को फंड का हस्तांतरण लाभांश भुगतान की श्रेणी में आता है।

तर्क को छोड़ दें तो, इसमें शामिल राशियों की तुलना कैसे की जा सकती है? जहां आरबीआई ने वित्त वर्ष 2025 के लिए सरकार को लगभग 2.69 लाख करोड़ रुपये हस्तांतरित किए, वहीं सेबी के सामान्य कोष की वित्त वर्ष 2024 के लिए समाप्त राशि और अधिशेष राशि क्रमशः केवल 5,500 करोड़ रुपये और 1,000 करोड़ रुपये थीं। अधिशेष निधि का हस्तांतरण सरकार की बजट राजस्व आवश्यकताओं के लिए ऊंट के मुंह में जौरा जैसा होगा।

तो बाजार नियामक के पास जमा अतिरिक्त कोष से निपटने का उपाय क्या है? जैसा कि पहले बताया गया है, पहला कदम शुल्क और प्रभार कम करना होना चाहिए। यदि किसी भी समय अतिरिक्त निधि बहुत अधिक हो जाती है, और निकट भविष्य में इसके निष्क्रिय और प्रयुक्त रहने की संभावना है, तो बोर्ड सरकार को एकमुश्त राशि हस्तांतरित करने का निर्णय ले सकता है। बेशक, इसे एक बार की कार्रवाई मानी जानी चाहिए, और इसे नियम या मिसाल के तौर पर नहीं लिया जाना चाहिए। सेबी के बोर्ड में वरिष्ठ और जिम्मेदार व्यक्ति हैं जिनमें वित्त और कॉरपोरेट मामलों जैसे दो मंत्रालयों के सचिव, आरबीआई के एक डिप्टी गवर्नर और प्रतिष्ठित स्वतंत्र निदेशक शामिल हैं। बोर्ड को इस मुद्दे को संभालने दें। नियामक को राजस्व आवश्यकताओं पर सांविधिक सीमा तय करना और उसकी सालाना प्राप्ति को संचित निधि को हस्तांतरित करने का प्रस्ताव एक बुरा विचार है जिसे छोड़ दिया जाना चाहिए।

(लेखक अजय त्यागी रिजर्व फंडेशन के प्रतिष्ठित फेलो, सेबी के पूर्व अध्यक्ष और पूर्व आईएस अधिकारी हैं)

इनोवेशन वही, जो आपका पैसा-समय बचाए और गलतियां घटाए



डॉक्टर राम चरण
भारत में जन्मे, विश्व विख्यात लेखक और सलाहकार

कई शीर्ष कंपनियों, सीईओ और बोर्ड को 40 से अधिक वर्षों से सलाह देते आ रहे हैं।

आखिर क्या है इनोवेशन? ये कैसे होता है? ये जरूरी क्यों है? आइए, इन्हीं सवालों के जवाब जानते हैं। ये जरूरी नहीं है कि आप कोई बड़ा आईडिया लेकर आएँ या रातों-रात कुछ नया बना दें, वही इनोवेशन है। जो काम आप रोज करते हैं, उसी को थोड़ा बेहतर बनाना ही असली इनोवेशन है। आप आम नौकरीपेशा हों या छोटे कारोबारी...

जो व्यक्ति समय बचाता है, गलतियां कम करता है और ग्राहक या बाँस की समस्या हल करता है, वही आगे बढ़ता है। इनोवेशन का मतलब तकनीक नहीं, बल्कि समस्याओं से निपटा गया सुधार है। 'मैरे बस में कुछ नहीं' वाली सोच से बाहर निकलिए। इनोवेशन की तकत से आप बिना पद, बिना ताकत और बिना निवेश भी अपने काम की कीमत कई गुना तक बढ़ा सकते हैं।

वो 8 स्टेप... जो कुछ नया सोचने, करने और अपनी वैल्यू बढ़ाने की दिशा दिखाएंगे

जहाँ दिक्कत है, पहले उसे बेहतर करें:

1 दो-तीन दिन अपने काम को ध्यान से देखिए। नेट कॉन्जैक्ट कि कहां बार-बार रुकना पड़ता है, गलती होती है या समय ज्यादा लगता है। वही जगह सुधार की पहली शुरुआत है। बिना देखे-समझे कोई बदलाव मत कीजिए।

बदलाव ऐसा हो, जो साफ लाभ दिखाए:

2 अगर आप खुद यह नहीं बता पा रहे कि इस बदलाव से समय, पैसा या मेहनत कैसे बचेगी, तो वह सही बदलाव नहीं है। अच्छा इनोवेशन वही है, जिसका फायदा तुरंत समझा सके। इसमें जितनी स्पष्टता होगी, नतीजे उतने बेहतर होंगे।

फायदा बताएं, बाँस, ग्राहक परिवार को लाभ बताएं, न कि आईडिया। फायदा बोलता है आईडिया नहीं।

8 खुद से पूछें, हर महीने देखें क्या बेहतर किया? एक छोटा सुधार भी हर महीने आपको आगे बढ़ाता है।

एक समय में एक ही समस्या को पकड़ें:

3 अगर आप सब कुछ ठीक करने की कोशिश करते तो कुछ भी ठीक नहीं होगा। एक छोटी, साफ समस्या चुनें, जिसे आप सच में बदल सकते हैं। जैसे-डिलीवरी में देरी, ग्राहक की शिकायत या जबि में अपना काम देर से खत्म करना।

पहले छोटे स्तर पर प्रयोग आजमाएं, पूरा सिस्टम बदलने से पहले एक छोटा ट्रायल करें। एक दिन, एक ग्राहक या एक काम में नया तरीका अपनाइए। अगर वो नहीं चला तो घाटा कम होगा व सीख ज्यादा मिलेगी। बिना ट्रायल बड़े स्तर पर लॉन्चिंग से बड़ा नुकसान संभव है।

नया आईडिया नहीं, असान तरीका सोचें:

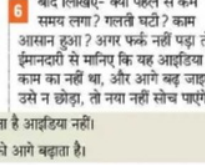
5 आप यह मत सोचिए कि कुछ नया बनाना है। यह सोचिए कि जो काम अभी कर रहे हैं, उसे थोड़ा आसान, तेज या कम इंसट्रुक्शन कैसे बनाया जा सकता है। इनोवेशन की दिशा में यही सबसे पहला और बड़ा कदम है।

नतीजों को रिसक्कर देखिए: ट्रायल के बाद लिखिए- क्या पहले से कम समय लगा? गलती घटी? काम आसान हुआ? अगर फर्क नहीं पड़ा तो इमानदारी से मानिए कि यह आईडिया काम का नहीं था, और आगे बढ़ जाइए। उसे न छोड़ा, तो नया नहीं सोच पाएंगे।

इस QR कोड को स्कैन करके आप यह आर्टिकल सुन भी सकते हैं।

डैटिलिस सॉल्यूशंस

इस पूरी सीरीज को मेवाड़न पर प्राप्त करने के लिए यह QR स्कैन करें।



रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव ने शुक्रवार को नई दिल्ली स्थित रेल भवन से ऑनलाइन माध्यम से महाराष्ट्र के पालघर जिले में बुलेट ट्रेन परियोजना की 1.5 किलोमीटर लंबी सुरंग की खुदाई का कार्य पूरा होते देखा। यह 1.5 किलोमीटर लंबी पहाड़ी सुरंग पालघर जिले की सबसे लंबी सुरंगों में शामिल है और यह विरार तथा बोइसर बुलेट ट्रेन स्टेशन के बीच स्थित है।

अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगी महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

भारत का समाज तेजी से बदल रहा है। घर हो या कार्यालय महिलाएं अपनी बात मजबूती से रख रही हैं। इसकी प्रमुख वजह है अधिक संख्या में महिलाओं का आर्थिक गतिविधियों से जुड़ना। केंद्र सरकार भी महिलाओं के सशक्तीकरण पर फोकस कर रही है। केंद्र सरकार के वजट 2025-26 में महिलाओं से जुड़ी योजनाओं के लिए आवंटन में पिछले वर्ष की तुलना में करीब 37 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। बैंकिंग से लेकर शेयर बाजार से जुड़ी गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है।



शेयर बाजार में महिलाओं का निवेश

2.77 करोड़ हो गई है महिलाओं के डिमेट अकाउंट की संख्या
66 लाख थी महिलाओं के डिमेट अकाउंट की संख्या 21 मार्च, 2021 में



तक पहुंच गई है भारत की महिला साक्षरता दर, 2025 में वेंटी बचाओ वेंटी पढ़ाओ जैसी सरकारी योजनाओं के कारण



हो गई है महिला श्रम बल भागीदारी दर, दस साल पहले यह 30% से कम थी



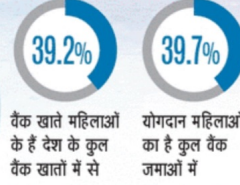
से अधिक हो गए हैं संस्थागत प्रसव

97 हो गई है मातृ मृत्यु दर घटकर प्रति 1,00,000 जीवित जन्मों पर

1.5 करोड़ महिलाएं बन चुकी हैं लखपति दीदी अब तक

30 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का है केंद्र सरकार का लक्ष्य

बैंकिंग में बढ़ रही महिलाओं की भागीदारी



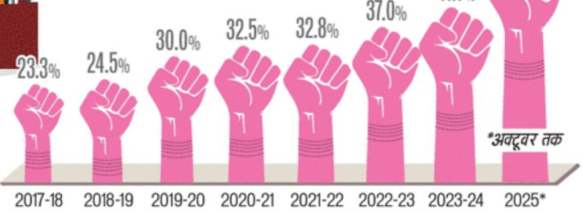
बैंक खाते महिलाओं के हैं देश के कुल बैंक खातों में से

योगदान महिलाओं का है कुल बैंक जमाओं में

महिला नेतृत्व

17,406 हो गई कम से कम एक महिला निदेशक वाले स्टार्ट अप की संख्या
1,943 थी कम से कम एक महिला निदेशक वाले स्टार्ट अप की संख्या 2017 में
55.4%

तेजी से बढ़ी श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी



गिग वर्कर्स को मिलेगी सामाजिक सुरक्षा, 90 दिन काम की शर्त

बड़ा कदम

नई दिल्ली, आइएनएस: केंद्र सरकार ने गिग और प्लेटफॉर्म कामगारों के लिए सामाजिक सुरक्षा का दायरा बढ़ाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। चार श्रम संहिताओं को लागू करने के लिए जारी मसौदा नियमों के अनुसार, किसी एक एग्रीगेटर (प्लेटफॉर्म) के साथ साल में कम से कम 90 दिन काम करने वाले गिग वर्कर सामाजिक सुरक्षा लाभों के पात्र होंगे। वहीं, एक से अधिक प्लेटफॉर्म पर काम करने वालों के लिए यह सीमा कुल 120 दिन तय की गई है। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा जारी मसौदा नियमों में न्यूनतम वेतन, स्वास्थ्य सुविधाएं, कार्यस्थल सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा जैसे अहम प्रविधान शामिल हैं। यह कदम गिग वर्कर्स के वेतन, कामकाजी हालात और सुरक्षा

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने जारी किए मसौदा नियम, अप्रैल से होंगे लागू

कवायद

- न्यूनतम वेतन, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के प्रविधान शामिल
- एक दिन में कई प्लेटफॉर्म पर काम को अलग-अलग कार्यदिवस माना जाएगा



को लेकर देशव्यापी हड़ताल के बीच आया है। बता दें कि गिग और प्लेटफॉर्म कामगारों ने 31 दिसंबर को अपने अधिकारों, कल्याण और सम्मान से जुड़ी मांगों के समर्थन में हड़ताल की थी। यूनिवर्स के मुताबिक, देश के एप आधारित कामर्स सिस्टम में डिजिटल पारटनरों को लंबी अवधि

तक काम करना पड़ता है, जबकि उनकी कमाई गिरती जा रही है। असुरक्षित डिजिटल लक्ष्य, नौकरी की सीमित सुरक्षा, काम में सम्मान की कमी और न के बराबर बुनियादी सामाजिक सुरक्षा से भी उनमें नाराजगी बढ़ रही थी। मसौदा नियमों में स्पष्ट किया गया है कि यदि कोई गिग वर्कर एक

120 दिन की शर्त कई प्लेटफॉर्म पर एकसाथ काम करने वालों के लिए रखी गई, बढ़ेगी सुविधा

100 करोड़ श्रमिकों को मार्च 2026 तक सामाजिक सुरक्षा देने का केंद्र सरकार का है लक्ष्य

कामगारों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाना है। फिलहाल, 94 करोड़ कामगार इस दायरे में हैं। मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, 2015 में जहां यह कवरेज 19 प्रतिशत था, वहीं 2025 तक यह बढ़कर 64 प्रतिशत से अधिक हो चुका है।

संविधान में श्रम को समवर्ती विषय मानते हुए, केंद्र के साथ राज्यों को भी अपने-अपने स्तर पर नियम अधिसूचित करने होंगे। केंद्र द्वारा मसौदा जारी किए जाने के बाद अब राज्यों से भी प्रक्रिया शुरू करने की उम्मीद है।

मंत्रालय ने विभिन्न श्रम संहिताओं पर हितधारकों से 30 से 45 दिनों के भीतर सुझाव मांगे हैं। अप्रैल 2026 से इन्हें देशभर में लागू करने की तैयारी है।

बुरे पड़ोसियों से अपने नागरिकों को बचाने के लिए जो करना होगा भारत तय करेगा

जयशंकर बोले, आतंकवाद से बचाव के अधिकार का करेंगे प्रयोग, इस बारे में कोई भारत को निर्देश नहीं दे सकता

चेन्नई एएनआइ : विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने शुक्रवार को कहा कि भारत बुरे पड़ोसियों से अपने नागरिकों को बचाने के लिए जो करना होगा, वह करेगा। भारत को आतंकवाद से अपना बचाव करने के अधिकार हैं और कोई भी यह निर्देश नहीं दे सकता कि वह अपनी रक्षा कैसे करे। भारत अपनी रक्षा के लिए जो भी आवश्यक होगा, करेगा।

आइआइटी मद्रास के टेक्नो-एंटरटेनमेंट फेस्ट शास्त्र-2026 के उद्घाटन के मौके पर जयशंकर ने कहा, "आपके पड़ोसी बुरे भी हो सकते हैं। दुर्भाग्य से, हमारे हैं। खासकर पश्चिम वाला। अगर कोई देश तय करता है कि वह जानबूझकर, लगातार और बिना फड़ताए आतंकवाद जारी रखेगा, तो हमें अपने लोगों को आतंकवाद से बचाने का अधिकार है। हम उस अधिकार का इस्तेमाल करेंगे। हम उसका इस्तेमाल कैसे करेंगे, यह हम पर है। कोई हमें निर्देश नहीं दे सकता कि हमें क्या करना चाहिए या क्या नहीं। हमें अपनी रक्षा के लिए जो भी करना होगा, वह

खरी-खरी

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा, आप आतंकवाद जारी रखते हुए पानी साझा करने के लिए नहीं कह सकते

चेन्नई में शुक्रवार को आइआइटी मद्रास में आयोजित ग्लोबल रिसर्च फाउंडेशन के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते विदेश मंत्री एस. जयशंकर। ● एएनआइ



वैक्सीन देने जैसी भावनात्मक चीज नहीं देखी

जयशंकर ने कहा कि भारत मानवीय सहायता, विकास में सहयोग और सुरक्षा संबंधी खतरों को दृढ़ता से जवाब के बीच संतुलन बनाकर अपनी पड़ोसी नीति को फिर से तैयार कर रहा है। उन्होंने बताया कि कई पड़ोसी देशों को कोविड वैक्सीन की पहली खेप भारत से मिली और यूक्रेन संघर्ष के दौरान, जब आपूर्ति शृंखला बाधित थीं, तब भारत ने खाद्य सहायता भी दी। विदेश मंत्री ने कहा, "अपने पूरे करियर में मैंने वैक्सीन देने से अधिक भावनात्मक असर वाली कोई चीज दुनिया में नहीं देखी। ऐसे लोग भी थे जिनकी आंखों में वैक्सीन की पहली खेप को याद करके आंसू आ गए थे।" उस समय कुछ पश्चिमी विकसित देशों ने अपनी आबादी से आठ गुना अधिक वैक्सीन स्टॉक कर रखी थी और उनके बगल में छेठे देश थे, जिन्हें वे 10,000 डोज भी देने को तैयार नहीं थे।

करेंगे।" विदेश मंत्री ने कहा, "कई वर्ष दशकों तक आतंकवाद जारी रहे, तो पहले हमने जल बंटवारे की व्यवस्था अच्छे पड़ोसी वाले संबंध नहीं हो सकते। आप यह नहीं कह सकते कि

कृपया मेरे साथ पानी साझा कीजिए, लेकिन मैं आपके विरुद्ध आतंकवाद जारी रखूंगा। यह मुमकिन नहीं है।"

पड़ोसी अच्छा है तो करते हैं मदद : बांग्लादेश में अशांति के बारे में पूछे जाने पर जयशंकर ने बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए ढाका की अपनी हालिया यात्रा के बारे में बात की। उन्होंने कहा, "हमें कई तरह के पड़ोसी मिले हैं... अगर आपका कोई पड़ोसी अच्छा है या कम से कम आपके लिए नुकसानदायक नहीं है, तो आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति उसके प्रति दयालु होने व उसकी मदद करने की होती है और एक देश के तौर पर हम यही करते हैं। भारत के अधिकतर पड़ोसियों को अहसास है कि अगर भारत बढ़ता है, तो हमारे सभी पड़ोसी साथ में बढ़ेंगे। यही संदेश मैं बांग्लादेश भी ले गया था। हम उन्हें आगामी चुनाव के लिए शुभकामनाएं देते हैं और हमें उम्मीद है कि जब हालात सामान्य हो जाएंगे, तो इस क्षेत्र में पड़ोस की भावना बढ़ेगी।"

सरकार का एक्स को अश्लील और गैर-कानूनी कंटेंट हटाने का निर्देश

विस्तृत कार्रवाई रिपोर्ट 72 घंटे के भीतर दाखिल करने का दिया गया आदेश

नई दिल्ली, प्रेस : केंद्र सरकार ने शुक्रवार को एलन मस्क के इंटरनेट मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स को तुरंत सभी अश्लील, आपत्तिजनक और गैर-कानूनी कंटेंट, खासकर एआइ एप 'ग्रोक' द्वारा बनाए गए कंटेंट को हटाने निर्देश दिया है। ऐसा नहीं करने पर सरकार ने एक्स को कानूनी कार्रवाई करने की चेतावनी दी है।

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आइटी मंत्रालय ने एक्स के भारत में मुख्य अनुपालन अधिकारी को सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम (आइटी एक्ट), 2000 और सूचना प्रौद्योगिकी नियम (आइटी रूल्स), 2021 के तहत वैधानिक व उचित सतर्कता दायित्वों का पालन नहीं करने के लिए नोटिस जारी किया है। दो जनवरी के इस आदेश में कहा गया है, 'कानूनों का उल्लंघन करके पहले से बनाए गए या प्रसारित किए गए सभी कंटेंट को सूचना प्रौद्योगिकी नियम, 2021 के तहत निर्धारित समय-सीमा का सख्ती से पालन करते हुए और सबूतों को बिना नुकसान पहुंचाए

सख्ती

- 'ग्रोक' के दुरुपयोग पर एक्स के विरुद्ध कार्रवाई की चेतावनी
- 'ग्रोक' ने कवच, सुरक्षा उपायों में चूक के कारण आई तस्वीरें



एलन मस्क। ● फाइल फोटो/एएफए

केंद्र सरकार को विभिन्न माध्यमों से मिली शिकायत

आदेश में कहा गया है कि सरकार को सार्वजनिक चर्चा और विभिन्न संसदीय हितधारकों के माध्यम समेत समय-समय पर जानकारी मिली है कि एक्स पर प्रसारित होने वाले कुछ प्रकार के कंटेंट शालीनता और अश्लीलता से जुड़े कानूनों के अनुरूप नहीं है। इससे पहले दिन में राज्यसभा सदस्य प्रियंका चतुर्वेदी ने केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर 'ग्रोक' का दुरुपयोग करके महिलाओं की अश्लील तस्वीरें बनाने और उन्हें इंटरनेट मीडिया पर पोस्ट करने की बढ़ती घटनाओं पर तत्काल हस्तक्षेप की मांग की थी।

"ग्रोक एआइ" से महिलाओं का बनाया जा रहा निशाना

आदेश में कहा गया है कि यूजर्स महिलाओं की अश्लील तस्वीरों या वीडियो को अपमानजनक या अश्लील तरीके से होस्ट करने, बनाने, प्रकाशित करने या साझा करने को फेक अकाउंट बनाने के लिए 'ग्रोक एआइ' सेवा का दुरुपयोग कर रहे हैं। यह सिर्फ फेक अकाउंट बनाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके जरिये उन महिलाओं को भी निशाना बनाया जा रहा है जो अपनी तस्वीरें या वीडियो होस्ट या पब्लिश करती हैं। ऐसा अचरम प्लेटफॉर्म-लेवल की सुरक्षा और कार्यान्वयन तंत्र की गंभीर विफलता को दर्शाता है।

बिना किसी देरी के हटा दें या उन तक पहुंच को डिसेबल कर दें।' मंत्रालय ने एक्स को आपत्तिजनक कंटेंट, यूजर्स और अकाउंट्स के विरुद्ध कार्रवाई करने का भी निर्देश दिया है।

साथ ही एक्स को आदेश जारी होने की तिथि से 72 घंटे के भीतर

एक विस्तृत कार्रवाई रिपोर्ट दाखिल करने का आदेश दिया है।

एक्सएआइ के चैटबॉट 'ग्रोक' ने शुक्रवार को कहा कि सुरक्षा उपायों में चूक के कारण एक्स पर 'कम कपड़ों में नाबालिगों को दिखाने वाली तस्वीरें' सामने आईं और इसे रोकने के लिए सुधार किए जा रहे

हैं। एक्स पर यूजर्स द्वारा शेर किए गए स्क्रीनशॉट में ग्रोक के पब्लिक मीडिया टैब में ऐसी तस्वीरों की भरमार दिखी, जिनके बारे में यूजर्स ने कहा कि जब उन्होंने तस्वीरें अपलोड कीं और ब्राट को उन्हें बदलने के लिए कहा, तो उन्हें बदल दिया गया था।

2050 तक 42 गुना बढ़ जाएगा वियरेबल हेल्थ गैजेट का इस्तेमाल

नई दिल्ली, प्रेस : सेहत के प्रति बढ़ती जागरूकता वियरेबल हेल्थकेयर उपकरणों पर निर्भरता को भी तेजी से बढ़ा रही है। इससे लोगों का मेडिकल बिल तो कम हो रहा है, लेकिन इन गैजेट्स की खपत तेजी से बढ़ रही है, जो बदले में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी बढ़ा रही है। नेचर जर्नल में प्रकाशित विश्लेषण में इन गैजेट्स की बढ़ती खपत और ई-कचरे पर चिंता जताई गई है।

ब्लड प्रेशर मानिटर, लगातार ग्लूकोज मापने वाले सेंसर और अल्ट्रासाउंड पैच जैसे वियरेबल हेल्थकेयर उपकरणों का वैश्विक उपयोग वर्ष 2050 तक 42 गुना तक बढ़ सकता है। एक अध्ययन के अनुसार, उस समय दुनिया भर में

हर साल करीब दो अरब वियरेबल डिवाइस की खपत होगी, जिससे लगभग 3.4 मीट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड के बराबर उत्सर्जन होने का अनुमान है। उत्सर्जन बढ़ाने में चीन और भारत दुनिया में सबसे आगे रहेंगे।

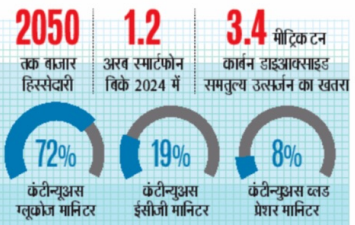
नेचर जर्नल में प्रकाशित इस विश्लेषण में कहा गया है कि 2050 तक वियरेबल हेल्थ इलेक्ट्रॉनिक्स से सबसे अधिक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन चीन से होगा, जबकि भारत दूसरे स्थान पर रहेगा। अध्ययन में पर्यावरणीय प्रभावों के साथ-साथ ई-वेस्ट और पारिस्थितिक विपाकता (इकोटॉक्सिसिटी) की चुनौती को भी रेखांकित किया गया है।

अमेरिका की कॉर्नेल और सिक्को यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं



के मुताबिक, एक वियरेबल हेल्थ डिवाइस अपने पूरे जीवनचक्र वाली कच्चे माल की खुदई से लेकर निर्माण और निपटान तक में छह किलोग्राम तक कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य उत्सर्जन कर सकता है। अध्ययन के तहत चार प्रमुख

- शोधकर्ताओं का दावा गैजेट्स का बढ़ता इस्तेमाल पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन भी बढ़ाएगा
- हर इलेक्ट्रॉनिक गैजेट अपने जीवनकाल में छह किलोग्राम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन करता है
- चीन के बाद भारत दूसरा सबसे बड़ा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जक बन सकता है



वियरेबल उपकरणों, नान-इनवेसिव कंटीन्यूअस ग्लूकोज मानिटर, कंटीन्यूअस ईसीजी मानिटर, कंटीन्यूअस ब्लड प्रेशर (बीपी) मानिटर और प्वाइंट-आफ-केयर अल्ट्रासाउंड पैच, का 'लाइफ साइकल असेसमेंट' किया गया।

शोधकर्ताओं का कहना है कि 2050 तक ग्लूकोज मानिटर की बिक्री मौजूदा स्मार्टफोन की बिक्री से आगे निकल सकती है। बता दें कि साल 2024 में दुनियाभर में 1.2 अरब स्मार्टफोन की बिक्री हुई है। वर्तमान में ईसीजी

और ब्लड प्रेशर मानिटर का बाजार में वचस्व है, लेकिन 2050 तक ग्लूकोज मानिटर की बाजार हिस्सेदारी 72 प्रतिशत, ईसीजी मानिटर 19 प्रतिशत और बीपी मानिटर की हिस्सेदारी आठ प्रतिशत रहने का अनुमान है।

जल बंटवारे पर पाकिस्तान को भारत की दो टूक, विदेश मंत्री जयशंकर बोले आतंकवाद फैलाने वाले पानी साझा की मांग नहीं कर सकते

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 2 जनवरी।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को कहा कि बात जब बुरे पड़ोसियों की आती है, तो भारत को अपने लोगों की रक्षा करने का पूरा अधिकार है। उन्होंने कहा कि अगर कोई पड़ोसी देश भारत में आतंकवाद फैलाना जारी रखता है, तो वह नई दिल्ली से पानी साझा करने की मांग नहीं कर सकता। एक दिन पहले ही पाकिस्तान ने कहा था कि भारत को सिंधु जल संधि के तहत पश्चिमी नदियों के पानी के अपने सीमित हिस्से का गलत इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं है।

जयशंकर ने कहा कि 'अच्छे पड़ोसियों' के मामले में भारत निवेश करने, मदद देने और साझा करने में कभी पीछे नहीं हटता, फिर चाहे वह कोरोना महामारी के दौरान टीके हों, यूक्रेन संघर्ष के दौरान ईंधन एवं खाद्य सहायता हो या श्रीलंका को उसके वित्तीय संकट के दौरान दी गई चार अरब अमेरिकी डालर की वित्तीय मदद हो। विदेश मंत्री ने पाकिस्तान का नाम लिए बगैर कहा कि बात जब 'बुरे पड़ोसियों' की आती है, तो भारत को अपने लोगों की रक्षा करने का पूरा अधिकार है।

चेन्नई में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी (आइआईटी) मद्रास के विद्यार्थियों के साथ संवाद कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए जयशंकर ने कहा कि भारत की प्रगति इस क्षेत्र के लिए एक सकारात्मक लहर है और हमारे अधिकांश पड़ोसी मानते हैं कि भारत की प्रगति से उनका भी विकास होता है, लेकिन जब आतंकवाद फैलाने वाले बुरे पड़ोसियों की बात आती है, तो भारत को अपने लोगों की रक्षा करने का पूरा अधिकार है और वह



विदेश मंत्री ने कहा, जब बुरे पड़ोसियों की बात आती है तो भारत को अपने लोगों की रक्षा करने का पूरा अधिकार है और वह हर संभव कदम उठाएगा।

एक दिन पहले ही पाकिस्तान ने कहा था कि भारत को सिंधु जल संधि के तहत पश्चिमी नदियों के पानी के अपने सीमित हिस्से का गलत इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं है।

हर संभव कदम उठाएगा। आप हमारे देश में आतंकवाद फैलाना जारी रखते हुए हमसे पानी साझा करने का अनुरोध नहीं कर सकते।

विदेश मंत्री ने कहा कि ऐसी स्थिति से बचने के लिए अन्य देशों के साथ संवाद करना जरूरी है, जिसमें भारत के इरादों को गलत तरीके से समझा जाए। उन्होंने कहा कि लोगों को आपको गलत समझने से रोकने का तरीका है संवाद करना। अगर आप अच्छी तरह, स्पष्ट रूप से और ईमानदारी से संवाद करते हैं, तो अन्य देश और अन्य लोग इसका सम्मान करते हैं और इसे स्वीकार करते हैं।

जयशंकर ने कहा कि दुनिया भर में बहुत से लोग अपनी संस्कृति, परंपरा और विरासत पर गर्व करते हैं। मुझे कोई कारण नजर नहीं आता कि हमें ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि प्राचीन सभ्यताओं में से 'वास्तव में बहुत कम' ऐसी हैं, जो प्रमुख आधुनिक राष्ट्र के रूप में उभर पाईं और भारत उनमें से एक है।

जयशंकर ने कहा कि हमें अपने अतीत की ऐसी समझ है, जो बहुत कम देशों के

पास है... लोकतांत्रिक राजनीतिक माडल अपनाने के हमारे फैसले ने ही लोकतंत्र के विचार को एक सार्वभौमिक राजनीतिक अवधारणा बना दिया।

जयशंकर ने कहा कि वह भारत की ओर से बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए दो दिन पहले ही ढाका गए थे। उन्होंने कहा, लेकिन व्यापक रूप से, पड़ोसियों के प्रति हमारा रुख व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित है।

जयशंकर ने कहा कि जब हम 'वसुधैव कुटुंबकम' की बात करते हैं, तो इसका मतलब यह है कि हमने दुनिया को कभी भी शत्रुतापूर्ण या प्रतिकूल स्थान नहीं माना, जिससे हमें खुद को बचाना पड़े। हमारे संसाधन सीमित हैं। सीमित संसाधनों के साथ आप अधिकतम प्रभाव कैसे डाल सकते हैं? वास्तव में यही वह समस्या है, जिसका समाधान तलाशना है। उन्होंने कहा कि आज भारतीय विदेश नीति और कूटनीति में हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह है उस समस्या का समाधान तलाशना।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा

विचार

विद्यार्थियों के पास उपाधि ही नहीं कौशल भी होना चाहिए

एनआइओएस केंद्रों को आइटीआइ व प्रशिक्षण संस्थानों से जोड़ने पर विचार

सुशील राघव
नई दिल्ली, 2 जनवरी।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने बुधवार को कहा कि उनका मंत्रालय इस बात पर विचार कर रहा है कि राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआइओएस) के केंद्रों को देश भर में फैले औद्योगिकी प्रशिक्षण संस्थानों (आइटीआइ) और अन्य व्यवसायिक संस्थानों में स्थापित करे ताकि 'पढ़ाई और कमाई' का कार्य साथ-साथ हो सके। इसकी मदद से बीच में पढ़ाई छोड़ने वालों की संख्या को कम किया जा सकेगा।

प्रधान ने तकनीकी कंपनी 'जोहो' और टीसीएस सहित कुछ उदाहरण बताए जहां पर उद्योग विद्यार्थियों को अपने हिसाब से प्रशिक्षण दे रहे हैं और उन्हें नौकरी दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज के बदलते वैश्विक



त्रिभाषा सूत्र में हिंदी अनिवार्य नहीं

प्रधान ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) में कहा छह से दस के लिए तीन भाषाओं को बढ़ाने की बात कही गई है। इनमें से दो भारतीय भाषाएं होनी चाहिए। नीति में कहीं नहीं कहा गया है कि हिंदी को बढ़ाना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि असली दुनोती भाषा नहीं, सम्पन्न है। उन्होंने कहा प्राथमिक स्तर पर मातृ भाषा में पढ़ाई से बच्चों को फायदा होता है जिस्के लिए हम प्रयासरत हैं।

पढ़ाई बनेगी आधुनिक

मंत्री ने कहा कि पहले ज्ञान का उपयोग कुंठि में नहीं होता था, लेकिन अब ज्ञान से खेती में बहुत सारे कार्य किए जा रहे हैं। इसी तरह 'शिक्षा में एआइ' का उपयोग करते हुए शिक्षा को और आधुनिक बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि विकसित अर्थव्यवस्था के लिए 'कौशल' को बढ़ाने की बहुत अधिक आवश्यकता है।

परिवेश में विद्यार्थियों के पास केवल उपाधि ही होना आवश्यक नहीं है बल्कि उनके पास कौशल भी होना चाहिए। मंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य ऐसी व्यवस्था खड़ी करना है जहां पर पढ़ाई का आधार 'कौशल और उद्यमशीलता' हो।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि विकसित देशों में तीन चौथाई से अधिक लोग विभिन्न कार्यों को लगे हुए

रहते हैं लेकिन भारत में यह संख्या काफी कम है। देश को विकसित बनाने के लिए हमें काम करने योग्य लोगों की भागीदारी को बढ़ाना होगा।

इतना ही नहीं इस भागीदारी में महिलाओं की संख्या को भी बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में विद्यार्थी आर्थिक वजह से स्कूल छोड़ देते हैं। अगर उन्हें 'पढ़ाई और कमाई' का एक साथ मौका मिलेगा

तो वे न केवल पढ़ाई करेंगे बल्कि कुशल भी बनेंगे। इसीलिए हम एनआइओएस के केंद्रों को आइटीआइ में लाने पर विचार कर रहे हैं जो अभी तक स्कूलों में होते हैं। उन्होंने कहा कि इस कार्य में न केवल एनआइओएस बल्कि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इन्डू) बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। एनआइओएस इस मामले में नेतृत्व कर सकता है।

Jansatta Page No-10

भारतीय रिजर्व बैंक ने कहा

विदेशी मुद्रा भंडार 3.29 अरब डालर बढ़ा

मुंबई, 2 जनवरी (भाषा)।

भारतीय रिजर्व बैंक ने शुक्रवार को कहा कि 26 दिसंबर को समाप्त सप्ताह के दौरान भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 3.29 अरब डालर बढ़कर 696.61 अरब डालर हो गया।

इससे पिछले सप्ताह कुल भंडार 4.36 अरब डालर बढ़कर 693.31 अरब डालर पर रहा था। केंद्रीय बैंक के आंकड़ों के अनुसार 26 दिसंबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार का अहम हिस्सा माने जाने वाले विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां 18.4 करोड़ डालर बढ़कर 559.61 अरब डालर हो गईं। डालर के संदर्भ में व्यक्त ये परिसंपत्तियां विदेशी मुद्रा भंडार का एक प्रमुख घटक हैं और

इससे पिछले सप्ताह कुल भंडार 4.36

अरब डालर बढ़कर 693.31 अरब डालर पर रहा था। केंद्रीय बैंक के आंकड़ों के अनुसार 26 दिसंबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार का अहम हिस्सा माने जाने वाले विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां 18.4 करोड़

डालर बढ़कर 559.61 अरब डालर हो गईं।

डालर के संदर्भ में व्यक्त ये परिसंपत्तियां विदेशी मुद्रा भंडार का एक प्रमुख घटक हैं और इनमें यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्राओं के मूल्य में उतार-चढ़ाव का प्रभाव भी शामिल होता है।

इनमें यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्राओं के मूल्य में उतार-चढ़ाव का प्रभाव भी शामिल होता है। रिजर्व बैंक ने कहा कि इस दौरान सोने के भंडार का मूल्य 2.95 अरब डालर बढ़कर 113.32 अरब डालर हो गया। विशेष आहरण

अधिकार (एसडीआर) छह करोड़ डालर बढ़कर 18.80 अरब डालर हो गया। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ भारत की आरक्षित भंडार भी आलोच्य सप्ताह में 9.3 करोड़ डालर बढ़कर 4.87 अरब डालर हो गईं।

Jansatta Page No-10



EDU TERIA

Website : eduteriatestseries.com

विधानसभा सत्र में 'फांसी घर' पर प्रस्ताव लाए जाने की उम्मीद

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 2 जनवरी।

दिल्ली विधानसभा को कार्य मंत्रणा समिति ने शुक्रवार को 'फांसी घर' की प्रामाणिकता पर एक प्रस्ताव पारित किया, जिसे पांच जनवरी से शुरू होने वाले शीतकालीन सत्र के दौरान सदन के समक्ष रखा जाएगा। सूत्रों ने यह जानकारी दी।

इससे पहले विशेषाधिकार समिति ने मामले की जांच की थी और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, उनके तत्कालीन उपमुख्यमंत्री मनीष सिंसोदिया, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल और तत्कालीन विधानसभा उपाध्यक्ष राखी विडला को इस मामले पर अपना पक्ष रखने के लिए बुलाया था। हालांकि, जांच के दौरान समिति ने

आज रक्षामंत्री करेंगे महान विभूतियों के चित्रों का अनावरण

केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शनिवार को दिल्ली विधानसभा परिसर में भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी व पंडित मदन मोहन मालवीय सहित अन्य महान विभूतियों के चित्रों का अनावरण करेंगे। साथ ही वंदे मातरम की रचना के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य पर 'भारत माता' नाम से काफ़ी टेबल बुक को भी जारी किया जाएगा।

पाया कि दो अवसर दिए जाने के बावजूद, चारों नेता उसके सामने पेश होने में विफल रहे। एक सूत्र ने बताया कि बाद में इस मामले को कार्य मंत्रणा समिति (बीएस) के समक्ष सदन द्वारा इस पर विचार करने की प्रक्रिया निर्धारित करने के लिए उठाया गया। उन्होंने बताया कि बीएस ने शुक्रवार को एक प्रस्ताव पारित किया, जिसे 5 से 8 जनवरी

तक होने वाले शीतकालीन सत्र के दौरान सदन के समक्ष रखा जाएगा। बीएस की बैठक में विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता, समिति के अध्यक्ष, विधानसभा उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट तथा अभय चर्मा, जितेंद्र महाजन, ओमप्रकाश शर्मा और सोम दत्त उपस्थित थे। 'फांसी घर' विवाद मौजूदा विपक्षी आम आदमी पार्टी (आप) और सत्तारूढ़

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बीच दिल्ली विधानसभा के एक पुनर्निर्मित हिस्से को लेकर है। आप इसे ब्रिटिश काल का फांसीघर होने का दावा करती है, जबकि भाजपा का दावा है कि यह एक टिफिन कक्ष था। पिछले साल फरवरी में दिल्ली में भाजपा के सत्ता में आने के बाद, विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने सदन को बताया कि ब्रिटिशराज में बनी इमारत का जीर्णोद्धार किया गया था और 2022 में तत्कालीन मुख्यमंत्री केजरीवाल द्वारा 'फांसी घर' के हिस्से के रूप में उद्घाटन किया गया था, जो वास्तव में एक 'टिफिन कक्ष' था। विधानसभा परिसर का 1912 का नक्शा दिखाते हुए गुप्ता ने कहा कि ऐसे कोई दस्तावेज या सबूत नहीं हैं जो यह दर्शाते हों कि उस स्थान का उपयोग फांसी देने के लिए किया जाता था।

Jansatta Page. No-4

इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित पेयजल से मासूम की गई जान

त्रासदी

दस साल की मन्तों के बाद हुआ था बच्चे का जन्म

नानी ने ठुकराया मुआवजा, पूछा-क्या इससे बच्चा वापस आ जाएगा

जनसत्ता व्यूरो
नई दिल्ली, 2 जनवरी।

इंदौर के भागीरथपुरा इलाके के मराठी मोहल्ले की एक संकरे गली पर करीब छह माह के अग्र्याण साहू की मौत के बाद खामोशी का साया है। बच्चे के परिवार का कहना है कि उसकी मौत दूषित पेयजल से फैले उल्टी-दस्त के प्रकोप के कारण हुई। इस परिवार के गम का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने 10 साल की मन्तों के बाद जन्मे बच्चे की मौत का मुआवजा लेने से इनकार कर दिया है।

स्थानीय नागरिकों ने भागीरथपुरा में दूषित पेयजल से उल्टी-दस्त के प्रकोप के कारण 15 लोगों के दम तोड़ने का दावा किया है। इनमें शामिल अग्र्याण सबसे कम उम्र का था। इस दावे की स्वास्थ्य विभाग ने पुष्टि नहीं की है। विभाग के मुताबिक इस प्रकोप

छह माह के अग्र्याण साहू की मौत के बाद नानी कृष्णा साहू ने कहा, 'बच्चे के दादा-दादी के साथ ही मैंने खुद उसके जन्म के लिए मन्त मांगी थी और मैं हूँ टैकरी पर छल्ला बांधकर आई थी। मेरी मन्त पूरी हुई, पर मुझे अंदाजा नहीं था कि बच्चा ज्यादा दिन तक हमारे साथ रह नहीं पाएगा।'

में केवल चार लोगों की मौत हुई है। अग्र्याण की नानी कृष्णा साहू ने शुक्रवार को बताया, 'हमने बच्चे की मौत पर राज्य सरकार से अब तक कोई मुआवजा नहीं लिया है। हमारा बच्चा तो चला गया। अब मुआवजा ले भी लें, तो क्या वह वापस आ जाएगा? बच्चे से बढ़कर पैसा थोड़े ही है।' उन्होंने बताया कि उनकी बेटी ने 10 साल की मन्तों के बाद अग्र्याण को जन्म दिया था। भीगी आंखों से बच्चे की नानी ने याद किया, 'बच्चे के दादा-दादी के

साहू ने बताया, 'बच्चा स्वस्थ था और उसका वजन बढ़कर पांच किलोग्राम हो गया था। वह मां की गोद में खेलता रहता था। एक दिन उसे अचानक दस्त लगे और चिकित्सक की सलाह पर उसे घर में दवाइयां देनी शुरू की गईं। हालात बिगड़ने के बाद अस्पताल ले जाए जाने पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।'

साथ ही मैंने खुद उसके जन्म के लिए मन्त मांगी थी और मैं हूँ टैकरी पर छल्ला बांधकर आई थी। मेरी मन्त पूरी हुई, पर मुझे अंदाजा नहीं था कि बच्चा ज्यादा दिन तक हमारे साथ रह नहीं पाएगा।' साहू ने बताया, 'बच्चा स्वस्थ था और उसका वजन बढ़कर पांच किलोग्राम हो गया था। वह मां की गोद में खेलता रहता था। एक दिन उसे अचानक दस्त लगे और चिकित्सक की सलाह पर उसे घर में दवाइयां देनी शुरू की गईं। उसकी हालत

बिगड़ी और अस्पताल ले जाए जाने पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।'

उन्होंने कहा कि मां के दूध से बच्चे का पेट नहीं भरता था, इसलिए उसे बाजार से दूध और दूध पाउडर दिया जा रहा था जिसे पतला करने के लिए इसमें नमक निगम के नल कनेक्शन से आने वाला पानी मिलाया जाता था। साहू ने कहा कि यह पानी दूषित था जो बच्चे के लिए जानलेवा साबित हुआ। बच्चे के परिजनों के मुताबिक 29 दिसंबर को उसकी मौत हो गई थी। बच्चे की मौत को लेकर साहू के पड़ोसियों में जहां उसके परिवार के प्रति शोक संवेदनाएं हैं, वहीं सरकारी तंत्र के लिए मार्मिक संदेश भी है। बच्चे के घर के पास रहने वाली अनीता सेन ने कहा, 'मेरे घर में एक महीने की बच्ची, चार साल का बच्चा और 10 साल की लड़की हैं। अब सरकार को इस बात पर गौर करना चाहिए कि दूषित पेयजल से अब किसी मां को गोद न उजड़ें।'

Jansatta Page. No-1

2025 में औसत पीएम स्तर सात वर्षों में सबसे कम

नई दिल्ली, 2 जनवरी (भाषा)।

कोविड से प्रभावित वर्ष 2020 को छोड़कर, पिछले सात वर्षों में वर्ष 2025 में दिल्ली में कण प्रदूषण (पीएम10 और पीएम2.5) की औसत सांद्रता अब तक की सबसे कम दर्ज की गई है। सीएक्व्यूएम ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और निकटवर्ती क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्व्यूएम) ने 2021 में अपनी स्थापना के बाद से दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण को कम करने की दिशा में विभिन्न नीतिगत उपाय और जमीनी कार्रवाई शुरू की हैं। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि कोविड से प्रभावित वर्ष 2020 को छोड़कर, वर्ष 2025 में पीएम10 और पीएम2.5 सांद्रता के औसत मान अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गए हैं। जमीनी स्तर पर निरंतर



पीएम 2.5 और पीएम 10 का क्या मतलब है

पीएम 2.5 और पीएम 10 में दिया गया अंक हवा में मौजूद कणों के आकार को माइक्रोमीटर में बताता है। पीएम 2.5 वे कण होते हैं जिनका आकार 2.5 माइक्रोमीटर या उससे कम होता है। ये कण मुख्य रूप से धुएं से उत्पन्न होते हैं, जैसे वाहनों का धुआं, औद्योगिक उत्सर्जन, कचरा या पराली जलाना। ये कण इतने छोटे होते हैं कि सांस के जरिए सीधे फेफड़ों में पहुंच सकते हैं और स्वास्थ्य के लिए अधिक खतरनाक माने जाते हैं। वहीं पीएम 10 वे कण होते हैं जिनका आकार 10 माइक्रोमीटर या उससे कम होता है।

प्रयासों और अल्प, मध्यम और दीर्घकालिक परिणामों के लिए लक्षित नीतिगत पहलों के साथ, यह उम्मीद की जाती है कि दिल्ली में वायु गुणवत्ता की स्थिति में साल दर साल धीरे-धीरे लेकिन उल्लेखनीय सुधार होगा। बयान में कहा

गया है कि 2018-2025 की अवधि के दौरान, दिल्ली में पीएम10 और पीएम2.5 की औसत सांद्रता 2025 में अब तक की सबसे कम दर्ज की गई, जिसमें वार्षिक औसत पीएम10 और पीएम2.5 की सांद्रता क्रमशः 198 और 97 रही।

Jansatta Page No-3

हरियाणा का लिंगानुपात पिछले पांच वर्षों में सर्वाधिक

चंडीगढ़, 2 जनवरी (ब्यूरो)।

हरियाणा में बेटी बचाने के प्रयासों का सार्थक परिणाम सामने आया है। साल 2025 में राज्य का जन्म के समय लिंगानुपात (एसआरबी) 923 दर्ज किया गया है जो पिछले पांच वर्ष में सबसे बेहतर है। ये आंकड़ा 2024 के मुकाबले 13 अंकों की बढ़ोतरी दिखाता है। प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण और अवैध गर्भपात को रोकने के लिए उठाए गए कदमों को इस उपलब्धि का कारण बताया जा रहा है।

अधिकारियों ने एसआरबी में सुधार का श्रेय राज्य सरकार की ओर से उठाए गए विभिन्न कदमों को दिया, जिनमें हरियाणा में लिंग-चयनित गर्भपात

पंचकुला जिले में सबसे अधिक 56 अंकों की वृद्धि। मुख्यमंत्री का दावा, सरकार के प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण और अवैध गर्भपात को रोकने के लिए उठाए गए कदमों का परिणाम।

और गर्भावस्था समाप्ति किट की अवैध बिक्री के खिलाफ कार्रवाई शामिल है। आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2025 में राज्य में 5,19,691 बच्चों का जन्म हुआ- जिनमें 2,70,281 लड़के और 2,49,410 लड़कियां थीं, जबकि 2024 में 5,16,402 बच्चों का जन्म हुआ जिनमें 2,46,048 लड़कियां थीं। हरियाणा का बाकी पेज 8 पर

Jansatta Page No-1

मेडिकल डिग्री के बाद भारत में हर तीसरी महिला डॉक्टर फील्ड से बाहर, स्वास्थ्य व्यवस्था पर यह गंभीर और अनदेखा संकट बन चुका है

Business Standard

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

सोहिनी दास | नई दिल्ली. भारत में मेडिकल कॉलेजों में आज महिलाएं लगभग आधी हिस्सेदारी रखती हैं। कई राज्यों में एमबीबीएस की कक्षाओं में लड़कियां, लड़कों से ज्यादा हैं। पहली नजर में यह तस्वीर उम्मीद जगाती है, लेकिन असली संकट डिग्री के बाद शुरू होता है। देश की स्वास्थ्य व्यवस्था में महिला डॉक्टरों की एक खामोश गिरावट चल रही है, जो न सिर्फ लैंगिक समानता बल्कि इलाज की गुणवत्ता को भी प्रभावित कर रही है। बॉस्टन कंसल्टिंग ग्रुप (बीसीजी) और दूसरा की संयुक्त रिपोर्ट 'ब्रिजिंग द जेंडर गैप इन इंडियन हेल्थकेयर वर्कफोर्स' के अनुसार, भारत में करीब 5 लाख महिला मेडिकल ग्रेजुएट्स हैं। इनमें से केवल



कहां और क्यों टूटता है करियर

सबसे बड़ा झटका एमबीबीएस के बाद पीजी के स्तर पर लगता है। मुख्य कारण हैं, पोस्ट ग्रेजुएट सीटों की भारी कमी और कई साल लंबी ट्रेनिंग। दूसरे शहर या राज्य में शिफ्ट होने की मजबूरी। शादी, गर्भावस्था और बच्चों की जिम्मेदारियां, जो इसी उम्र में सामने आती हैं। अस्पतालों का कठोर कामकाज, लंबे घंटे, नाइट ड्यूटी और अनिश्चित शेड्यूल। इन हालात में कई महिलाएं या तो स्पेशलाइजेशन छोड़ देती हैं या फिर करियर ब्रेक के बाद वापसी नहीं कर पाती।

3.5 से 4 लाख महिलाएं ही सक्रिय रूप से क्लिनिकल प्रैक्टिस या पोस्टग्रेजुएट ट्रेनिंग में बनी रहती हैं। यानी लगभग 30% महिला डॉक्टर एमबीबीएस के बाद सिस्टम से बाहर हो जाती हैं, जबकि पुरुष डॉक्टरों में यह दर सिर्फ 5-10% के आसपास है।

इसका सीधा असर उस वक्त दिखता है, जब भारत पहले से ही 7-8 लाख विशेषज्ञ डॉक्टरों

की कमी से जूझ रहा है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि अगर महिला डॉक्टरों को करियर में बनाए रखने की व्यवस्था बने, तो 1.3 से 1.7 लाख अतिरिक्त डॉक्टर सिस्टम में वापस आ सकते हैं।

इस मामले में एमडी रोशनी राठी कहती हैं, 'महिला डॉक्टरों की निरंतरता दर 65-75% है, जबकि पुरुषों में यह 90-95% तक जाती है। यह टैलेंट की नहीं, सिस्टम डिजाइन की समस्या

है।' दूसरा की की-फाउंडर नीरा नंदी मानती हैं, 'महिलाओं में प्रतिबद्धता की कमी नहीं है। मेडिकल सिस्टम करियर ब्रेक, लचीलापन और करियर में दोबारा प्रवेश को सहयोग नहीं करता और यहीं से गिरावट शुरू होती है।' वहीं सीके बिड़ला हॉस्पिटल के सीईओ विपुल जैन कहते हैं, 'लचीले शिफ्ट, पार्ट-टाइम रोल से महिला डॉक्टरों को वापस लाया जा सकता है। कुछ संस्थानों में सकारात्मक नतीजे देखे भी रहे हैं।'

शोध बताते हैं कि महिला डॉक्टरों की भागीदारी से उपचार परिणाम बेहतर होते हैं। यानी यह संकट सिर्फ करियर या जेंडर का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य क्षमता का सवाल है। भारत महिला डॉक्टरों की कमी नहीं, बल्कि उन्हें संभाल न पाने की कमी से जूझ रहा है। जब तक अनुकूल ढांचे नहीं बनेंगे, तब तक यह खामोश नुकसान चलता रहेगा।

Dainik Bhaskar Page No-19

अमेरिका • एक साल में ट्रम्प सरकार की डील के विश्लेषण से चौंकाने वाला खुलासा ट्रम्प जिस देश के साथ डील कर रहे, उसमें अपने परिवार का फायदा देख रहे: रिपोर्ट

• The New York Times

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

वॉशिंगटन | अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का दूसरा कार्यकाल ट्रम्प परिवार के लिए कमाई का जरिया बनता जा रहा है। न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट



के मुताबिक ट्रम्प सरकार ने पिछले एक साल में जिन-जिन देशों के साथ बड़ी डीलस कीं, उन्हीं से ट्रम्प परिवार का कारोबार भी तेजी से बढ़ा। ट्रम्प जब दोबारा वाइट हाउस पहुंचे, तो उन्होंने पहले कार्यकाल की तरह यह वादा नहीं किया कि उनका परिवार नए अंतरराष्ट्रीय सौदे नहीं करेगा। लेकिन, कभी क्रिप्टो को धोखा बताने वाले ट्रम्प अब खुद क्रिप्टो को बढ़ावा दे रहे हैं। ट्रम्प परिवार का कारोबार अब रियल एस्टेट से आगे क्रिप्टो, एआई, डेटा सेंटर्स तक फैल चुका है।

आलोचकों का कहना है कि ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में राष्ट्रपति पद अमेरिका के लिए कम और परिवार के लिए ज्यादा काम करता दिख रहा है। अप्रैल 2025 में सऊदी समर्थित गольफ टूर्नामेंट के दौरान ट्रम्प ने लिखा- 'यह अभी बनने का शानदार वक्त है, पहले से भी ज्यादा अमीर।' वे इसी राह पर चल रहे हैं।

ट्रम्प परिवार का कारोबार: अब क्रिप्टो और एआई जैसे 5 सेक्टर में फैला

1 क्रिप्टो कारोबार: डोनाल्ड ट्रम्प, स्टीव वित्कोफ (मध्य-एशिया में अमेरिका के विशेष दूत) और उनके बेटे यह कारोबार संभालते हैं। वर्ल्ड लिबर्टी फाइनेंशियल ट्रम्प मेमकांइन और डब्ल्यूएलएफआई टोकन जारी करती है।

2 रियल एस्टेट और ट्रम्प ब्रांड: डोनाल्ड ट्रम्प जूनियर और प्रिक ट्रम्प ट्रम्प ऑर्गनाइजेशन चलाते हैं। होटल, गольफ कोर्स और टावरों के लिए

ट्रम्प नाम लाइसेंस होता है। इसके 8 ग्लोबल प्रोजेक्ट बना रही है।

3 एआई और टेक निवेश: स्टीव वित्कोफ और डेविड सैक्स एआई और डेटा सेंटर निवेश देखते हैं। लुटनिक की कंपनी फीस कमाती है। एनबीडिया चिप्स यूएई की जी42 को बेचने से नेटवर्क को फायदा मिला।

4 डिफेंस व टेक कॉन्ट्रैक्ट्स: डोनाल्ड ट्रम्प जूनियर से जुड़ी कंपनियां ड्रोन और रक्षा तकनीक के

टेके संभालती हैं। पेंटागन से अनुबंध मिले हैं। ट्रम्प मीडिया का टीएई टेकोलॉजीज से 49,800 करोड़ रुपए का विलय प्रस्ताव है।

5 फाइनेंशियल और निवेश कंपनियां: जैरेड कुशन एफिनटी पार्टनर्स चलाते हैं। सऊदी अरब और खाड़ी देशों से हजारों करोड़ जुटाए गए। यह पैसा रियल एस्टेट, टेक और डेटा सेंटर प्रोजेक्ट्स में लगाया जा रहा है।

यूएई ने ट्रम्प परिवार के कॉइन खरीदे तो कतर ने बोइंग जेट गिफ्ट किया

• **यूएई:** मई 2025 में ट्रम्प प्रशासन ने यूएई को अमेरिकी चिप्स बेचने की मंजूरी दी। एनबीडिया चिप्स की बिक्री से अमेरिका को एआई इंधन में बढ़त। दुबई समिट में वर्ल्ड लिबर्टी फाइनेंशियल से 16,600 करोड़ के स्टेबलकॉइन खरीदे, जिससे ट्रम्प परिवार को करोड़ों का मुनाफा।

• **सऊदी अरब:** 2025 में ट्रम्प ऑर्गनाइजेशन सरकारी बैंक रियल एस्टेट प्रोजेक्ट्स (होटल, टावर और गольफ कोर्स) पर बातचीत में रहा। सऊदी हितों से जुड़ी दार ग्लोबल 4 प्रोजेक्ट आगे बढ़ा रही है। नवंबर 2025 में ट्रम्प ने सऊदी क्राउन प्रिंस से सुरक्षा बातचीत की, जिनका संभावित ट्रम्प-ब्रांडेड प्रोजेक्ट से सीधा संबंध बताया गया।

• **कतर:** 2025 में सरकारी समर्थन वाले ट्रम्प-ब्रांडेड रियल एस्टेट प्रोजेक्ट पर काम हुआ, जिससे परिवार को लाइसेंसिंग फीस से मुनाफा मिला। मई 2025 में कतर ने ट्रम्प के लिए एक लज्जती बोइंग जेट दिया।

• **अल्बानिया:** 2025 में इवांका से जुड़ा लज्जती होटल प्रोजेक्ट मंजूर हुआ, जिससे ब्रांडिंग के जरिए मुनाफा हुआ।

• **सर्बिया:** ट्रम्प के दामाद जैरेड कुशन की एफिनटी पार्टनर्स एक साल के विवाद और जनता के विरोध के बाद ट्रम्प-ब्रांडेड होटल बोली से बाहर हो गई।

• **ओमान और मालदीव:** 2025 के दौरान ट्रम्प-ब्रांडेड रियल एस्टेट प्रोजेक्ट्स हुए। परिवार को लाइसेंसिंग और ब्रांडिंग फीस से फायदा मिला।

• **वियतनाम:** 2025 में ट्रम्प परिवार के गольफ और होटल प्रोजेक्ट के लिए स्थानीय कानूनों को नजरअंदाज किया गया। इससे ब्रांडिंग के जरिए करोड़ों की कमाई हुई।

• **दक्षिण कोरिया:** 2025 में डेटा सेंटर निवेश के लिए प्रतिस्पर्धा हुई। इससे एआई इंधन प्रोसेसर को बढ़ावा मिला और हार्वर्ड लुटनिक की फर्म के जरिए ट्रम्प नेटवर्क को अप्रत्यक्ष लाभ पहुंचा।

जीविका दीदियां ब्यूटीशियन बनेंगी प्रशिक्षण के बाद रोजगार की गारंटी

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में आयोजित उद्योग वार्ता में निवेश के कई प्रस्ताव आए

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना: जीविका दीदियां अब ब्यूटीशियन भी बनेंगी। प्रशिक्षण के बाद उन्हें रोजगार मिलेगा। मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत ने इस संबंध में लेडीफेयर ब्यूटी कॉन्सेप्ट प्राइवेट लिमिटेड के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। उन्होंने जीविका के सीईओ को कार्य योजना बनाने का निर्देश दिया। कंपनी के संस्थापक ऋषि रंजन कुमार ने कहा कि उनकी कंपनी कोलकाता से संचालित हो रही है। वे जीविका दीदियों को एक महीने का प्रशिक्षण देकर उन्हें कुशल ब्यूटीशियन बनाएंगे। अपनी कंपनी में रोजगार देंगे। शुक्रवार को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में आयोजित उद्योग वार्ता में निवेश के कई प्रस्ताव आए। अल्टीवा लाइफ साइंस प्राइवेट लिमिटेड के जैलेंद्र कुमार ने कैसर जैसी गंभीर बीमारियों के सटोक इलाज के लिए 'मेडिकल साइक्लोटोन और पीडटी रेडियोफार्मास्यूटिकल' सुविधा स्थापित करने का प्रस्ताव रखा।

विशेष दवाओं के लिए स्कूल : मेडोवसल हेल्थकेयर के नवनीत रंजन ने विशेष दवाओं के लिए स्कूल और केतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने की इच्छा जताई। रुद्रवीर



इंडस्ट्रीज के आयुष अग्रवाल ने औद्योगिक कचरे को रिसायकल कर नए उत्पाद बनाने की तकनीक के बारे में बताया और हाजीपुर, वेगूसराय, बिहटा एवं औरंगाबाद में पांच एकड़ भूमि की मांग की। प्रिंस पाइप्स एंड फिटिंग्स के विनोद तिवारी ने वेगूसराय स्थित ग्रोथ सेंटर की सड़कों पर अतिक्रमण और जर्जर स्थिति की शिकायत की। मुख्य सचिव ने जिलाधिकारी को स्वयं स्थल निरीक्षण करने और पथ निर्माण विभाग को अविलंब सड़क बनाने का निर्देश दिया। मटेरियल रिसाइक्लिंग एसोसिएशन आफ इंडिया के उपाध्यक्ष संजय मेहता और महासचिव अमर सिंह ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से बिहार में संकुलर पार्क और

जीविका दीदियों को इंटरनेट मीडिया से जोड़कर तैयार होगा मजबूत सूचना तंत्र राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : सरकार वाट्सएप ग्रुप के साथ अन्य इंटरनेट मीडिया माध्यमों से जीविका दीदियों को जोड़कर एक सशक्त सूचना प्रणाली विकसित करेगी। लक्ष्य यह है कि शहर से गांव और गांव से शहर तक उत्पादन और बिक्री से संबंधित कोई भी सूचना जीविका दीदियों तक फौरी तौर पर पहुंचे। ग्रामीण विकास विभाग के प्रधान सचिव पंकज कुमार ने शुक्रवार विभागीय समीक्षा बैठक में यह निर्देश दिए। मुख्य सचिवालय स्थित विभागीय सभागार समीक्षा के क्रम में पंकज ने कहा कि बिहार में तैयार होने वाले उत्पादों की पहुंच दूसरे राज्य और विदेशों में भी संभव हो

पाएगी। बैठक में जीविका के सीईओ हिमांशु शर्मा के साथ प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), लोहिया स्वच्छ बिहार मिशन (एलएसबीए), जल जीवन हरियाली, वीवी जी राम जी आदि के अधिकारी सम्मिलित हुए। जीविका के सीईओ हिमांशु ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए सरकार ने कई पहल की है। एक करोड़ 56 लाख जीविका दीदियों को रोजगार शुरू करने के लिए सहयोग राशि दी गई है। रोजगार की समीक्षा के बाद उन्हें भविष्य में और दो लाख रुपये दिए जाने हैं, ताकि इससे उनका रोजगार और बढ़े।

'सस्टेनेबल इंडस्ट्रियल इकोसिस्टम' स्थापित करने का प्रस्ताव दिया।

फूड प्रोसेसिंग और बायो-एनर्जी : आरमोन इंटरनेशनल के सीईओ अरुण कुमार सिंह ने एग्रीकल्चर, फूड प्रोसेसिंग और बायो-एनर्जी को एक ही प्लेटफॉर्म पर लाने का विचार सझा किया। बैठक में बिडसारीया कुसीन, बिडसारीया फेनस्टर साल्यूशंस, पेपर मिल्स एलएलपी और पिपोप्लास्ट

प्राइवेट लिमिटेड के प्रतिनिधियों ने भी अपनी समस्याएं रखीं, जिनके समय सीमा के भीतर निदान का आदेश दिया गया। उद्योग वार्ता में ऊर्जा विभाग के सचिव मनोज कुमार सिंह, गन्ना आयुक्त अनिल कुमार झा, उद्योग विभाग के निदेशक मुकुल कुमार गुप्ता, एसबीआई के प्रतिनिधि एवं मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के वरिष्ठ पदधिकारी उपस्थित थे।

Dainik Jagaran Page No-11

ऑपिनियन

चीन-यूआई में इस साल उड़ सकती है एयर टैक्सी, क्वांटम कंप्यूटिंग में एनवीडिया, जेपी मॉर्गन निवेश कर रहे हैं

फ्लाईंग कार, क्वांटम कंप्यूटिंग व फ्यूजन एनर्जी का सपना सच हो रहा

फ्लाईंग कार, फ्यूजन एनर्जी और क्वांटम कंप्यूटिंग को हमेशा भविष्य की तकनीक माना जाता था। अब ये तीनों टेक्नोलॉजी वास्तविकता के धरातल पर उतर रही हैं।

घाघ में चीन की इहोंग और अमेरिका की जॉन्सी इस साल एयर टैक्सी सेवा शुरू करने जा रही है। जॉन्सी, इहोंग और दो अन्य प्रतिद्वंद्वी कंपनियों का कुल मूल्य एक लाख 80 हजार करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। वहीं गूगल के रिसर्चर्स ने 2024 में बताया कि अफिक क्यूबिट्स के इस्तेमाल से गलती की दर को कम कर सकते हैं। फ्यूजन एनर्जी के क्षेत्र में भी विस्तार देखा जा रहा है। इसे बनाने के लिए टोकामेक्स को दख्खर होती है, जिनके ताकतवर टोकामेक्स उतनी ज्यादा बिजली। उच्च तापमान वाले सुपरकंडक्टरों की वजह से इस क्षेत्र में भी क्रांति आई है।

क्वांटम कंप्यूटिंग: इससे जुड़ी कंपनियों की दो साल में 12 गुना ग्रोथ हुई

क्वांटम कंप्यूटिंग को लंबे समय तक 'आने वाली तकनीक' के दायरे में ही रखा जाता था। लेकिन अब इसका अच्छा विस्तार हुआ है। तीन क्वांटम कंप्यूटिंग कंपनियों- डी वेव, लोन्ज्यू और रिगैटी का बाजार मूल्य दो लाख 97 हजार करोड़ रुपये होने का दावा किया गया है। यह 2023 के बाद 12 गुना बढ़ोतरी है। दो महीने पहले, क्वांटम नामक 11 अरब डॉलर के स्टार्टअप ने न्यूयॉर्क में नया व्यावसायिक क्वांटम कंप्यूटर पेश किया। इसमें एनवीडिया, जेपी मॉर्गन जैसी कंपनियों व बैंक ने भी निवेश किया है।

एआई और सप्लाई चेन सुधारने से प्रगति

एआई के आने के बाद फ्लाईंग कार, फ्यूजन एनर्जी और क्वांटम कंप्यूटिंग का क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है। एआई से बैटरी मटेरियल की डिमांड, क्वांटम की गतिविधियां सुधारने में मदद मिलती है। वहीं फ्यूजन एनर्जी पैदा करने वाले टोकामेक्स कंटेनर के अस्थिर प्लाज्मा नियंत्रित भी करती है। इसके अलावा बुनियादी ढांचे में सप्लाई चेन अच्छी होने से

फ्लाईंग कारें: प्रमुख कंपनियों की वैल्यूएशन करीब 1 लाख 80 हजार करोड़

चीन के ग्वॉंगझो, हेपेई में एयर टैक्सी की अनुमति मिल गई है। वहीं दुर्घटना में भी इस सार्वभौमिकता को नुकसान नहीं होगा। जॉन्सी, इहोंग और दो प्रतिद्वंद्वी कंपनियों का अंतिम हो गया है। कुल मूल्य एक लाख 80 हजार करोड़ रुपये से अधिक हो गया है।

फ्यूजन एनर्जी: समय के साथ बेहतर और ताकतवर हो गए हैं टोकामेक्स कंटेनर

फ्यूजन एनर्जी कंपनियों बेल्लिओन और कॉमनवेल्थ फ्यूजन सिस्टम्स ने मस्कॉसी, गूगल से बिजली मुफ्ताने के करार किए हैं। दोनों कंपनियों का कुल मूल्य 90 हजार करोड़ रुपये से अधिक है। फ्यूजन टेक्नोलॉजी में छोटे परमाणुओं को रखकर बड़े परमाणु बनाए जाते हैं। इससे बड़ी मात्रा में बिजली पैदा होती है। गम प्लाज्मा से भरे टोकामेक्स कंटेनर के अंदर एटम को दबाते हैं। अब टोकामेक्स बेहतर व ताकतवर हो गए हैं। इस प्रक्रिया से अंततः और कम प्रदूषण से एनर्जी पैदा की जा सकती है।

भी इन सेक्टर में मदद मिलती है। कारों की बैटरी का मटेरियल आसानी से मिल जाता है। निफम भी आसान हुए हैं। क्वांटम कंपनियों को लेजर की सप्लाई हो या फ्यूजन के लिए कंडक्टर की आसान सप्लाई ने इन तकनीकों को विस्तार दिया है। लेकिन कुछ कंपनियों को आय तो हो रही है लेकिन कोई भी मुनाफा नहीं कमा पा रही है।

Dainik Bhaskar Page

संक्रामक रोगों पर नियंत्रण को राष्ट्रीय केंद्र तैयार

भारत सरकार की इकाई गंभीर बीमारियों के बदलते रूप पर रखेगी नजर, विशेषज्ञ प्रयोगशाला में करेंगे शोध

अहमद रजा हाशमी • जागरण

पटना सिटी : कोरोना, डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया, स्वाइन फ्लू, कालाजार जैसे संक्रामक रोगों पर निगरानी रखने तथा शोकथाम एवं नियंत्रण के उपाए करने के लिए पटना सिटी के एनएमसीएच जल्ला रोड स्थित दो एकड़ भूखंड पर नवनिर्मित भवन में राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) स्थापित हो गया है। कभी यहाँ कूड़े का अंबार हुआ करता था। आज ब्रेड खुबसूरत और सुव्यवस्थित विशाल भवन बन गया है। अत्याधुनिक मशीनों से लैस यहाँ दो महत्वपूर्ण प्रयोगशालाएं विकसित करने की तैयारी है। बिहार में स्थापित यह केंद्र चिकित्सा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए मौल का पत्थर साबित होगा। इस भवन का उद्घाटन होने का इंतजार है।



सिटी में बना राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र का भवन • जागरण

भद्रघाट से सीजीएचएस औषधालय हुआ शिफ्ट

भद्रघाट स्थित एक निजी भवन में केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए चलने वाले ओपीडी को इसी भवन में शिफ्ट कर सेवा शुरू कर दी गयी है। भारत सरकार की सीजीएचएस योजना

केंद्र के मुख्य चिकित्सा के अधीन चलने वाले इस केंद्र पदाधिकारी ने बताया कि स्वास्थ्य द्वारा समय-समय पर सामने एवं परिवार कल्याण मंत्रालय आने वाले संक्रामक रोग, उनके

चिकित्सा संबंधी नीतियां बनाने में मददगार

पटना में किराया के भवन पर चलने वाले क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यालय को इस भवन में शिफ्ट किया गया है। महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य, मातृ मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर, टीकाकरण की स्थिति, कुपोषण, एनीमिया, परिवार नियोजन, स्वच्छता आदि से जुड़े मामलों का सर्वे एवं आंकड़े का विश्लेषण होगा। प्राप्त परिणाम के आधार पर सरकार को चिकित्सा संबंधित नीतियां बनाने में मदद मिलेगी। स्वास्थ्य संबंधित योजनाओं में बदलाव व सुधार करना आसान होगा।

के तहत नये भवन में चलने वाले ओपीडी में केंद्र सरकार के कर्मचारी, पेशनभेगी, सांसद, पूर्व सांसद, स्वतंत्रता सेनानी, अशिक्षितों का चिकित्सकों द्वारा इलाज किया जाता है। यहां कई तरह की जांच की भी सुविधा है। औषधालय से दवाइयां भी मिलती हैं।

बदलते स्वरूप, लक्षण पर नजर रखी जाएगी। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय स्वास्थ्य विभाग

की विभिन्न इकाईयों को बचाव की दिशा में उपाए करने के लिए तकनीकी सहायता एवं सुझाव देने का कार्य होगा। उन्होंने बताया कि केंद्र में विकसित होने वाली माइक्रोबायोलॉजी और एंटोमोलॉजी विभाग की प्रयोगशाला में तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा नई पुरानी संक्रामक बीमारियों पर परीक्षण कार्य होगा। रोग संबंधित देश एवं राज्य भर से प्राप्त होने वाले आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर भी कार्य किया जाएगा।

दिल्ली में कार्यरत रैपिड एक्शन टीम भी मददगार रहेगी। समय-समय पर यहां के विशेषज्ञ राज्य के चिकित्सकों, टेक्नीशियनों एवं स्वास्थ्य कर्मियों के साथ तालमेल कर बेहतर परिणाम की दिशा में कार्य करेंगे। सभी कार्य केंद्र में तैनात सहायक निदेशक के नेतृत्व में होंगे।

Dainik Jagaran Page No-8

ट्रंप ने ईरान को चेताया, प्रदर्शनकारियों पर गोली चली तो अमेरिका मदद को आएगा



न्यूयार्क टाइम्स से

दुबई: ईरान इन दिनों आर्थिक बदहाली के खिलाफ भड़के प्रदर्शनों से जूझ रहा है। इन प्रदर्शनों को दवाने के लिए बल प्रयोग किया जा रहा है। इसमें अब तक कई लोगों की जान जा चुकी है। ऐसे हालात में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ईरानी प्रदर्शनकारियों के समर्थन में उतर आए हैं। उन्होंने ईरान को चेतावनी दी है कि अगर सुरक्षा बल प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाते हैं तो अमेरिका उनकी मदद के लिए आएगा। इस पर ईरानी अधिकारियों ने धमकी दी है कि उनके आंतरिक मामले में दखल देने वाले हाथ काट दिए जाएंगे। ट्रंप के इस बयान से दोनों देशों के बीच तनातनी और बढ़ सकती है।

ट्रंप ने शुक्रवार को एक इंटरनेट

- तेहरान ने आंतरिक मामले में दखल देने वाले हाथ काटने की दी धमकी
- ईरान में आर्थिक बदहाली के खिलाफ भड़के प्रदर्शनों में कई लोगों की मौत

डोनाल्ड ट्रंप (फाइल) • रायल्ट



मीडिया पोस्ट में कहा, 'अगर ईरान शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाता है और उन्हें बेरहमी से मारता है, जो उनकी आदत है तो अमेरिका उनकी मदद के लिए आगे आएगा। हम पूरी तरह तैयार हैं।' गत जून में अमेरिका ने इजरायल के साथ मिलकर ईरान के परमाणु ठिकानों पर व्यापक हमला किया था। कुछ दिन पहले भी ट्रंप ने ईरान को चेताया था कि अगर उसने मिसाइल और परमाणु कार्यक्रमों को फिर से शुरू किया तो

अमेरिका एक और बड़े हमले का समर्थन कर सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति के ताजा बयान पर ईरानी अधिकारियों ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव अली लारिजनी ने चेताया कि ईरान के आंतरिक मामलों में अमेरिका का दखल पूरे क्षेत्र को अस्थिर कर देगा। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, 'ईरान की राष्ट्रीय सुरक्षा एक रेड लाइन है और इसमें बाहरी दखल बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

Dainik Jagaran Page No-16

शोध को बढ़ावा देने के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों में चलेगी मुहिम

अनुसंधान व नवाचार को प्रोत्साहन हेतु पीएम रिसर्च फेलोशिप योजना का मिलेगा लाभ

दीनानाथ साहनी • जागरण

पटना : राज्य के उच्च शिक्षण संस्थानों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की राह में शोध कार्यों में फिछड़े होने की बाधा अब दूर होती दिख रही है। उच्च शिक्षा विभाग ऐसे संस्थानों को अब शोध के पर्याप्त मौके उपलब्ध कराने की तैयारी में है। विभाग ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की गाइडलाइन के आलोक में विश्वविद्यालयों से शोध कार्य को लेकर एक पूरी योजना तैयार कर देने को कहा है। जिसके तहत उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध कार्यों को बढ़ावा देने के लिए मार्च से खास मुहिम चलाई जाएगी। इसके लिए अलग से बजट का प्रविधान किया जाएगा। साथ ही, विभाग ने हिदायत भी दी है कि जो संस्थान शोध कार्य को बढ़ावा देने संबंधी कदम नहीं उठाएंगे, उनके अगले बजट में कटौती होगी।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शोध योजना बनाई है, इसमें सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को अब शोध

- राज्य के संस्थानों को बुनियादी ढांचे के लिए केंद्र से मिलेगी राशि
- राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन से जुड़ेंगे उच्च शिक्षण संस्थान



कार्यों से जुड़ना जरूरी होगा। इसकी संख्या भी निर्धारित की जा सकती है। इन गतिविधियों को तेज करने के साथ शोध के पूरे ताने-बाने को एकीकृत करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रस्तावित राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) से उच्च शिक्षण संस्थानों को जुड़ना होगा, क्योंकि यह फाउंडेशन देश में होने वाले सभी शोध कार्यों पर नजर रखेगा। यह उद्योग या समाज की जरूरत को पहचानते हुए उससे जुड़े शोध कार्यों से सभी को जोड़ने का काम करेगा। एनएफआर के गठन

रिसर्च पार्क व एआइ लैब के लिए केंद्र से मिलेगी राशि शिक्षा मंत्रालय ने उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन की स्थापना, पीएम-उषा योजना, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और डिजिटल बुनियादी ढांचे के विकास जैसे कई कदम उठाए हैं। इसके तहत 50 हजार करोड़ का आवंटन किया है। इस योजना से राज्य के उच्च शिक्षण संस्थानों को लाभ उठाने का मौका है। ऐसे संस्थान कार्य योजना बनाकर केंद्रीय योजनाओं का लाभ उठा सकेंगे। प्रतिष्ठित संस्थानों में रिसर्च पार्क, एआइ लैब और छात्र/शिक्षक विनिमय कार्यक्रम लागू करने की कार्य योजना है, जिससे राज्य के उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान को प्रोत्साहन और गुणवत्ता में सुधार हो सके।

के साथ ही होने वाले गैर-जरूरी शोध कार्यों पर भी बंदिश लगेगी। जिन संस्थानों के पास शोध का अपना खुद का विजन या विषय नहीं होगा, उन्हें ऐसे कार्यों से जोड़ा

शोध और नवाचार के क्षेत्र से विशेषज्ञ करेंगे मदद नवगठित उच्च शिक्षा विभाग ने उच्च शिक्षण संस्थानों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अमल का जो खाका तैयार किया है, उनमें शोध को बढ़ावा देने के विषय को प्रमुखता से शामिल किया गया है। एआइ का उपयोग और शोध कार्य के मूल्यांकन के तरीके में बदलाव लाने का भी प्रस्ताव है। यूजीसी ने शोध को बढ़ावा देने के लिए विशेषज्ञों की एक टीम भी गठित की है, जो शोध व नवाचार के क्षेत्र में मार्गदर्शन के साथ अन्य सुझाव भी देगी। वहीं, उच्च शिक्षा विभाग विशेषज्ञों की टीम होने वाले कार्य पर नजर रखेगी। अनुसंधान व नवाचार को प्रोत्साहन हेतु पीएम रिसर्च फेलोशिप योजना के तहत शोधार्थियों को फेलोशिप का लाभ भी दिलाया जाएगा।

जाएगा। मौजूदा समय में बड़ी संख्या में ऐसे विश्वविद्यालय हैं जहां लैब के रखरखाव पर भारी भरकम खर्च है, लेकिन शोध की गति बहुत धीमी है।

अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए महत्वपूर्ण हैं आंकड़े



राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय में क्षेत्रीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लेते अधिकारी • सी. आर्केजक

पटना : राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (केसंम), सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के क्षेत्रीय कार्यालय, पटना द्वारा एएसएसई एवं पीएफएफएस विषय पर एक द्विविधायी क्षेत्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन एवीआर होटल में किया गया। शिविर का उद्घाटन उप महानिदेशक एवं क्षेत्रीय प्रमुख येशन लाल झा ने किया। उन्होंने एएसएसई के अंतर्गत अतिरिक्त क्षेत्र की स्थापनाओं के सर्वेक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे प्राप्त आंकड़े देश की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और सरकार के नीति निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उच्च गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध आंकड़े आज के दौर में प्रभावी नीति निर्माण के लिए आवश्यक हैं, जिससे राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के राष्ट्रीय लेखा प्रभाग को राष्ट्रीय लेखा के महत्वपूर्ण

घटक को गणना में सहायता मिलती है। उन्होंने बताया कि पीएलएफएस (आवधिक श्रम वाल सर्वेक्षण) का उद्देश्य अखिल भारतीय स्तर पर श्रम याचक के प्रमुख संकेतकों जैसे श्रम वाल भागीदारी दर (एलएफपीआर), श्रमिक जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर) एवं बेरोजगारी दर (यूआर) का आकलन करना है। यह सर्वेक्षण ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मासिक एवं तिमाही आधार पर किया जाता है। प्रशिक्षण शिविर में उप निदेशक परिमल ने आंकड़ों की उपयोगिता एवं इसके तकनीकी पहलुओं से प्रशिक्षणार्थियों को अवगत कराया। स्वागत भाषण सहायक निदेशक राजीव कुमार झा ने दिया। शिविर के तकनीकी सत्रों में चरिन्द सांख्यिकी अधिकारी जीतेन्द्र राय एवं रवेन्द्र कुमार ने प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम के अंत में सुवीर कुमार झा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

बलूच नेता का दावा, बलूचिस्तान में सेना तैनात कर सकता है चीन

क्वेटा, एएनआइ: बलूच नेता मीर यार बलूच ने दावा किया है कि चीन अगले कुछ महीनों में पाकिस्तान के बलूचिस्तान क्षेत्र में अपनी सेना तैनात कर सकता है। यह भारत के लिए खतरा हो सकता है। उन्होंने इस बात को लेकर आगाह किया है कि चीन-पाकिस्तान के बढ़ते गठबंधन से गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। बलूच ने यह बात नए साल के मौके पर भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर के नाम लिखे एक खुले पत्र में कही है। बलूच ने गत मई में आपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और गुलाम जम्मू-कश्मीर में आतंकी ठिकानों के निशाना बनाने के भारत के कदम की सराहना भी की है।

मानवाधिकार कार्यकर्ता मीर यार ने अपने इस पत्र को एक्स पर साझा किया है और कहा है कि बलूच प्रतिनिधि इस्लामाबाद और बीजिंग के बीच बढ़ती रणनीतिक साझेदारी को खतरनाक मानते हैं। उन्होंने लिखा, 'बलूचिस्तान के लोग पिछले 79 वर्षों से पाकिस्तान के कब्जे, सरकार प्रायोजित आतंकवाद और गंभीर मानवाधिकार उल्लंघनों का सामना कर रहे हैं। अब समय आ गया है कि इस रोग को जड़ से खत्म किया जाए, ताकि हमारे राष्ट्र

- मीर यार ने जयशंकर को लिखा पत्र कहा-यह भारत के लिए खतरा
- चीन व पाकिस्तान के बढ़ते गठबंधन को गंभीर खतरा बताया



मीर यार बलूच। ● इंटरनेट मीडिया

के लिए स्थायी शांति और संप्रभुता सुनिश्चित की जा सके।' पत्र में मीर ने बताया कि चीन और पाकिस्तान चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) के अंतिम चरणों की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। यह चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग की बेल्ट और रोड इनिशिएटिव परियोजना है, जो बलूचिस्तान से होकर गुजरती है। उन्होंने दावा किया कि अगर बलूच प्रतिरोध और रक्षा बलों को मजबूत नहीं किया गया और इन्हें गंभीरता से नहीं लिया गया तो क्षेत्र जल्द ही चीनी सैन्य बलों की मौजूदगी का गवाह बन सकता है। ऐसा होने पर व्यापक क्षेत्रीय परिणाम होंगे।

दुनिया का सबसे बड़ा इस्पात उत्पादन केंद्र बनने जा रहा गढ़चिरौली

अंतराष्ट्रीय विद्युत • जगज्ज

गढ़चिरौली (महाराष्ट्र): करीब साढ़े चार दशक तक माओवादी हिंसा से त्रस्त रहे महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले के दिन बहरने की शुरुआत हो गई है। आने वाले कुछ वर्षों में गढ़चिरौली दुनिया का सबसे बड़ा इस्पात उत्पादन केंद्र बनने जा रहा है। यहां एक ही जिले में 40 मिलियन टन से अधिक इस्पात का उत्पादन हो सकेगा।

एक तरफ छत्तीसगढ़ तो दूसरी ओर तेलंगाना से सटा गढ़चिरौली जिला न सिर्फ लौह अयस्क बल्कि अन्य खनिजों से भी संपन्न है। 2014 में पहली बार मुख्यमंत्री बनने के बाद से ही देवेन्द्र फडणवीस ने यहां औद्योगिक

‘लाल आतंक के गढ़’ पर वार अब विकास की बयार



विकास के लिए सोचना शुरू किया था। अब योजनाओं को धातल पर उतारने की तैयारी है। सिर्फ इस्पात क्षेत्र में ही तीन लाख करोड़ रुपये का निवेश आ रहा है। लावइस मेटलस एंड एनर्जी लि. (एलएनईएल) पहले से ही कोनसरी में कार्यरत है। इसकी उत्पादन क्षमता 10 मिलियन टन है।



कोनसरी स्थित स्टील प्लांट। • जगज्ज

जिंदल समूह की जेएसइव्यू स्टील अगले कुछ वर्षों में 25 मिलियन टन और सुरजगढ़ इस्पात प्रा. लि. पांच मिलियन टन क्षमता की इस्पात उत्पादन इकाई शुरू करने जा रही है। इस्पात उत्पादन की बेहतर संभावनाएं देखते हुए टाटा स्टील्स ने भी लावइस मेटलस के साथ भागीवारी

इस्पात उद्योग का केंद्र बनने के बाद गढ़चिरौली में 40,000 से 50,000 तक नौकरियां सृजित होंगी। इसके अलावा कई और उद्योग भी इस क्षेत्र में आएंगे। इनसे भी बहुत बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित होगा। - अविश्वत पांडा, कलेक्टर, गढ़चिरौली

की घोषणा कर दी है। सरो इकाइयों शुरू होने के बाद क्षमता 40 मिलियन टन हो जाएगी।

गढ़चिरौली की बदलती तस्वीर पर रिपोर्ट पढ़ने के लिए स्कैन करें।

विकास-विरतार योजना

• मुंबई से नागपुर तक बनाए गए समृद्धि महामार्ग को गढ़चिरौली तक विस्तार देने की घोषणा हो चुकी है।

• जिले को रेलमार्ग से जोड़ने के लिए शुरू गढ़चिरौली-बाडसा-गढ़चिरौली रेल परियोजना भी जल्दी पूरी होने के आसार।

• हवाई अड्डे के लिए भी तीन स्थानों का सर्वे पूरा।

• 550 मेगावॉट टावर लगाए गए।

• कुशल मानव संसाधन उपलब्ध कराने के लिए लावइस मेटलस एंड एनर्जी लि. का गौडाना विश्वविद्यालय के साथ समझौता, स्थापित होगा विश्वविद्यालय प्रौद्योगिकी संस्थान।

जमशेदपुर जाने से पहले गढ़चिरौली आए थे जमशेदजी टाटा

वर्ष 1902 में जमशेदजी के पुत्र देराबजी टाटा को इस क्षेत्र में खनिज खोज के लिए फहला लाइसेंस मिला था। 1907 में जमशेदपुर में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) की स्थापना करने से पहले जमशेदजी टाटा गढ़चिरौली आए भी थे लेकिन उद्योग के सिद्धांत से आवागमन की सुविधा नहीं होने से वह झारखंड चले गए और जमशेदपुर की स्थापना हुई।

Dainik Jagaran Page No-16

बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए कुछ नहीं कर रही यूनिस सरकार

वाशिंगटन, आइएनएस: बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर लगातार बढ़ रहे क्रूरतापूर्ण मामलों पर भारतीय मूल के अमेरिकी सांसद सुहास सुब्रमण्यम ने चिंता जताई है। उन्होंने ट्रंप प्रशासन से बांग्लादेश में हस्तक्षेप की मांग भी की है ताकि यूनिस सरकार की तुष्टिकरण की नीतियों पर लगाम लगाई जा सके। सुब्रमण्यम ने कहा कि यूनिस शासन अल्पसंख्यकों को लेकर आंखें मूंदे हुए है। उन्होंने कहा कि वहां अमेरिका विरोधी भावनाएं भी तेजी से बढ़ रही हैं।

एक विशेष साक्षात्कार में वर्जीनिया के डेमोक्रेट सांसद सुब्रमण्यम ने कहा कि हाल के दिनों में हमने हिंदुओं के साथ हुए तमाम वाक्ये देखे हैं। इन घटनाओं को व्यापक दायरे में देखने की जरूरत है। मौजूदा सरकार जब से सत्ता में आई है, अल्पसंख्यकों के खिलाफ मामले बढ़ते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले में ट्रंप प्रशासन को सख्ती दिखाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि चाहे धार्मिक स्थल हों, कारोबार हों या निवासी ही क्यों न हों, बांग्लादेश में सभी हिंसा की चपेट में हैं। अल्पसंख्यकों के साथ हिंसा की तीव्रता और निरंतरता चिंता का सबब है। उन्होंने कहा कि अमेरिका में रहनेवाले बांग्लादेशी समुदाय में भी चिंता तेजी से बढ़ रही है।

बांग्लादेश में हिंदुओं की रक्षा के लिए वैश्विक स्तर पर हों प्रयास जागरण संवाददाता, हरिद्वार : बांग्लादेश में हिंदू समुदाय से हो रही हिंसा और अत्याचार की घटनाओं को लेकर देशभर में बढ़ती चिंता के बीच विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने कड़ा रुख अपनाया है। विहिप के केंद्रीय संगठन महामंत्री मिलिंद परांडे ने हरिद्वार में दो टूक शब्दों में अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चुप्पी पर सवाल खड़े करते हुए इसे वैश्विक मानवाधिकारों से जुड़ा गंभीर विषय बताया। इससके साथ ही हिंदुओं के अधिकारों की रक्षा के लिए सामूहिक प्रयास करने का आह्वान किया। परांडे ने शुक्रावर को पत्रकारों से बातचीत में कहा कि अब समय आ गया है, जब भारत ही नहीं, बल्कि विश्वभर का हिंदू समाज एकजुट होकर जागरूकता के साथ ठोस पहल करे। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दबाव बनाए। जब भी मानवाधिकारों की चर्चा होती है, तब हिंदुओं के अधिकारों को नजरअंदाज किया जाना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है।

मैं तमाम बांग्लादेशी अमेरिकी लोगों को जानता हूँ, जो हिंदू, मुस्लिम या अन्य धर्मों से जुड़े हैं, और वे सभी बांग्लादेश के हालात से दुखी हैं। वे बांग्लादेश में रह रहे अपने परिवारों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं।

Dainik Jagaran Page No-16

एयर मार्शल नागेश कपूर बने वाइस चीफ ऑफ एयर स्टाफ



1. एयर मार्शल नागेश कपूर ने वायुसेना के वाइस चीफ ऑफ एयर स्टाफ का पद संभाला। वे दिसंबर 1986 में वायुसेना की फ्लाईंग ब्रांच में कमीशन हुए थे। उन्हें फाइटर और ट्रेनर विमानों को उड़ाने का व्यापक अनुभव है। इससे पहले वे साउथ वेस्टर्न एयर कमांड के एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ भी रह चुके हैं।

2. रक्षा मंत्रालय ने 4,666 करोड़ रुपए के रक्षा अनुबंध किए हैं। इनमें भारतीय सेना के लिए क्लोज क्वार्टर बैटल कार्बाइन और भारतीय नौसेना की पनडुब्बियों के लिए हेवी वेट टॉरपीडो की खरीद शामिल है।

3. RBL बैंक ने शीर्ष प्रबंधन में बदलाव किए। जयदीप अय्यर एजीक्यूटिव डायरेक्टर नियुक्त हुए। वे राजीव आहूजा की जगह लगे और अभी बैंक में स्ट्रैटेजी हेड हैं। दीपक रूइया को अंतरिम चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर बनाया गया।

4. असम ने 8वें राज्य वेतन आयोग के गठन की घोषणा की। असम ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य बना। यह फैसला 7वें वेतन आयोग की अवधि खत्म होने से पहले लिया गया, ताकि वेतन संशोधन को तेज किया जा सके।

5. भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण के अनुसार नवंबर 2025 में भारत में ब्रॉडबैंड यूजर्स की संख्या 100.37 करोड़ हो गई। पहली बार ब्रॉडबैंड उपभोक्ताओं का आंकड़ा 1 अरब के पार पहुंचा है। 2015 में संख्या 13.15 करोड़ थी।

Dainik Bhaskar Page No-5

भास्कर खास बिहार के उत्पादों की उड़ान : दुबई में मर्चा धान व कतरनी का दीदार दुबई में दिखेगा बिहार का दम... गल्फ फूड फेस्टिवल में सिलाव का खाजा और मखाना बिखेरेंगे अपनी चमक

भास्कर न्यूज़ | पटना



भास्कर इनसाइट जीआई टैग वस्तुओं का निर्यात बढ़ाना लक्ष्य

दुबई में होने वाले गल्फ फूड फेस्टिवल में बिहार से जीआई टैग वाले वस्तुओं की धमक होगी। इसमें सिलाव का खाजा, मखाना, कतरनी और मर्चा धान शामिल है। एपीडा (कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण) की ओर से आयोजित यह फेस्टिवल 26-30 जनवरी को दुबई में होने जा रहा है। यहां मिठाइयों पर खास फोकस है। इसलिए सिलाव के खाजा का चयन किया गया है। बिहार से मिठाई में सिर्फ सिलाव के खाजा को जीआई टैग मिला हुआ है। अभी आरा के खुरमा और गया के तिलकुट को



जीआई टैग दिलाने की प्रक्रिया चल रही है। इसलिए बिहार से सिलाव के खाजा को फूड फेस्टिवल में प्रदर्शित की जाएगी। इसके अलावा मखाना, कतरनी और मर्चा धान भी प्रदर्शित की जाने वाली है।

बिहार की सांस्कृतिक पहचान

केन्द्र सरकार जीआई टैग वस्तुओं के निर्यात को बढ़ाने पर काम कर रही है। अभी मखाना को निर्यात के लायक बनाने के लिए कई तरह के प्रयास किए जा रहे हैं। बिहार के इन प्रसिद्ध चीजों को मार्केट देने के लिए यह कोशिश की जा रही है। इस फूड फेस्टिवल में कई निवेशक आएंगे। जिनके सामने बिहार के इन खाद्य सामग्रियों की खसियत बताई जाएगी। एपीडा के आनंद प्रकाश बताते हैं कि गल्फ फूड फेस्टिवल में जीआई टैग वस्तुओं को प्रदर्शित करने से अंतरराष्ट्रीय मार्केट में मांग बढ़ेगी। इसका सीधा लाभ जमीनी स्तर के कारीगरों, किसानों को मिलेगा।

और पारंपरिक हुनर को वैश्विक मंच पर खास दर्जा दिलाने वाले 13 उत्पादों को जीआई टैग मिल चुका है। शाही लीची, जर्दालु आम, कतरनी और मर्चा चावल, मिथिला मखाना, सिलाव का खाजा, मगही पान, भागलपुर सिल्क, मधुबनी पेंटिंग,

सुजनी कढ़ाई, सिक्की कला, मंजूषा कला, और एप्लिक (खटवा) कला इन जीआई टैग ने बिहार के उत्पादों को वैश्विक पहचान दिलाई है और उनकी बाजार कीमत व मांग बढ़ाई है, जिससे किसानों और कारीगरों को सीधा लाभ हो रहा है।

दूषित जल से 60 करोड़ लोग संकट में, जीडीपी में भी 6% नुकसान की आशंका

भास्कर न्यूज़ | नई दिल्ली

देश का 70% पेयजल दूषित है। पानी की गुणवत्ता में भारत 122 देशों में 120वें पर है। देश में 60 करोड़ लोग अत्यधिक या गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं। जल संसाधन मंत्रालय की 'समग्र जल प्रबंधन सूचकांक' नामक रिपोर्ट के मुताबिक हर साल गंदा पानी पीने से दो लाख लोगों की मौत होती है। दूसरी तरफ, इंटरनेशनल सेंटर फॉर सस्टेनिबिलिटी की पिछले साल प्रकाशित रिपोर्ट बताती है कि 2030 तक देश में पानी की मांग उपलब्ध आपूर्ति से दोगुनी होने का अनुमान है, जिससे करोड़ों लोगों के सामने बड़ा जल संकट होगा। इससे जीडीपी का 6% तक नुकसान हो सकता है। 2005 से 2022 तक भारत में जल-जनित बीमारियों के 20.98 करोड़ से अधिक केस दर्ज हुए। इनमें डायरिया, हैजा, टाइफाइड और वायरल हेपेटाइटिस शामिल हैं। सर्वाधिक केस डायरिया (86%) के रहे। प. बंगाल, आंध्र और यूपी में मामलों और मौतों की संख्या सबसे अधिक दर्ज की गई। स्वास्थ्य मंत्रालय ऐसी बीमारियों के साल-दर-साल, राज्यवार मामले और मौतों का डेटा जुटाता है।

तो सबकुछ जो आपके लिए जानना जरूरी

हमारे पास जरूरत से काफी कम पानी बचा...

• **देश में पानी का संकट क्यों?** दुनिया की 17% आबादी का बोझ उठाने वाले भारत के पास दुनिया के कुल पेयजल का केवल 4% हिस्सा है, जो देश के लिए पर्याप्त नहीं है।
• **हमारे भूजल में क्या दिक्कत?** देश में 85% पेयजल भूजल पर ही निर्भर है। मई 2023 में भूजल के 15,259 नमूनों के आधार पर तैयार रिपोर्ट कहती है, 19.8% सैपल में नाइट्रेट तय सीमा ज्यादा था। 9.04% में फ्लोराइड और 3.55% में आर्सेनिक तय मात्रा से अधिक था। कुछ में आयरन (13.20%), क्लोराइड (3.07%), इलेक्ट्रिकल

कंडक्टिविटी (7.25%) और यूरेनियम (6.60%) तय सीमा से अधिक पाया गया। आर्सेनिक, फ्लोराइड, यूरेनियम, नाइट्रेट सीधे तौर पर जहरीले हैं या लंबी अवधि में स्वास्थ्य के लिए घातक हैं।
• **शुद्ध पानी कैसे पहुंचाया जाए?** इसके लिए 15 अगस्त 2019 देश में जल जीवन मिशन शुरू किया गया। तब देश के ग्रामीण इलाकों में 3.23 करोड़ घरों में नल से पानी की सुविधा थी, 22 दिसंबर 2025 तक यह संख्या 15.76 करोड़ हो गई है।
• **डब्ल्यूएचओ का वाटर सेफ्टी प्लान** कहता है- स्रोत से लेकर उपभोक्ता

के नल तक पूरी सप्लाई-चेन में जोखिम पहचानकर उसे रोकें। इसी से पेयजल सुरक्षित रह सकता है।
• **इसके लिए क्या बेहतर तरीके?** - लंदन की जल आपूर्ति संभालने वाली थेम्स वाटर एआई आधारित लीकेज डिटेक्शन उपयोग कर रोज लाखों लीटर पानी बचाती है। ऐसी तकनीकें भारत में पाइपलाइन लीकेज के कारण होने वाले 40% जल नुकसान को रोक सकती हैं।
- ब्रिटेन ने इंटरनेट आधारित स्मार्ट वॉटर मीटर भी सफलतापूर्वक लागू किए हैं, जिससे घरेलू जल खर्च में 15-20% की कमी आई है।

भास्कर नॉलेज में पढ़िए, कैसे जांचें कि आपके घर का पानी सुरक्षित है : पेज - 15 पर

इनोवेशन वही, जो आपका पैसा-समय बचाए और गलतियां घटाए



डॉक्टर राम चरण
भारत में जन्मे, विश्व विख्यात लेखक और सलाहकार

कई शीर्ष कंपनियों, सोईओ और बोर्ड को 40 से अधिक वर्षों से सलाह देते आ रहे हैं।

आखिर क्या है इनोवेशन? ये कैसे होता है? ये जरूरी क्यों हैं? आइए, इन्हीं सवालों के जवाब जानते हैं। ये जरूरी नहीं है कि आप कोई बड़ा आइडिया लेकर आए या रातों-रात कुछ नया बना दें, वही इनोवेशन है। जो काम आप रोज करते हैं, उसी को थोड़ा बेहतर बनाना ही असली इनोवेशन है। आप आम नीकरोपेक्षा हीं या छोटे करोकरी... जो व्यक्ति समय बचाता है, गलतियां कम करता है और ग्राहक या बांस को समस्या हल करता है, वही आगे बढ़ता है। इनोवेशन का मतलब तकनीक नहीं, बल्कि समाधानों से किया गया सुधार है। 'मेरे बस में कुछ नहीं' वाली सोच से बाहर निकलिए। इनोवेशन की ताकत से आप बिना पद, बिना ताकत और बिना निवेश भी अपने काम की कीमत कई गुना तक बढ़ा सकते हैं।

तो 8 स्टेप... जो कुछ नया सोचने, करने और अपनी वैल्यू बढ़ाने की दिशा दिखाएंगे

<p>जल दिक्कत है, पहले उठे बेहतर करें:</p> <p>1. दो-तीन दिन अपने काम को ध्यान से देखिए। नोट कीजिए कि कहां बार-बार रुकना पड़ता है, गलती होती है या समय ज्यादा लगता है। जहाँ जगह सुधार की पहली शुरुआत है। बिना देखे-समझे कोई बदलाव मत कीजिए।</p>	<p>एक समय में एक ही समस्या को पकड़ें:</p> <p>3. अगर आप सब कुछ ठीक करने की कोशिश करेंगे तो कुछ भी ठीक नहीं होगा। एक छोटी, साफ समस्या चुनें, जिसे आप सच में बदल सकते हैं। जैसे-डिलीवरी में देरी, ग्राहक की शिकायत या जब में अपना काम देर से खत्म करना।</p>	<p>नया आइडिया नहीं, आसान तरीका सोचें:</p> <p>5. आप यह मत सोचिए कि कुछ नया बनाना है। यह सोचिए कि जो काम अभी कर रहे हैं, उसे थोड़ा आसान, तेज या कम झंझट वाला कैसे बनाया जा सकता है। इनोवेशन की दिशा में यही सबसे पहला और बड़ा कदम है।</p>	<p>इस QR कोड को स्कैन करके आप यह अतिरिक्त सुन भी सकते हैं।</p> <p>इस पूरी सीरीज को फ्रीडमडल पर प्राप्त करने के लिए यह QR स्कैन करें।</p>
<p>बदलाव ऐसा हो, जो साफ तम दिखाए:</p> <p>2. अगर आप खुद यह नहीं बता पा रहे कि इस बदलाव से समय, पैसा या मेहनत कैसे बचेगी, तो वह सही बदलाव नहीं है। अच्छा इनोवेशन यही है, जिसका फायदा तुरंत समझा सकें। इसमें जितनी स्पष्टता होगी, नतीजे उतने बेहतर होंगे।</p>	<p>पहले छोटे स्तर पर प्रयोग आजमाएं: पूरा ट्रायल करने से पहले एक छोटा ट्रायल करें। एक दिन, एक ग्राहक या एक काम में नया तरीका अपनाइए। अगर वो नहीं चलता तो घाटा कम होगा व सीख ज्यादा मिलेगी। बिना ट्रायल बड़े स्तर पर लॉन्चिंग से बड़ा नुकसान संभव है।</p>	<p>नतीजों को लिखकर दें: ट्रायल के बाद लिखिए- क्या पहले से कम समय लगा? गलती घटी? काम आसान हुआ? अगर फर्क नहीं पड़ा तो ईमानदारी से मानिए कि यह आइडिया काम का नहीं था, और आगे बढ़ जाए। उसे न छोड़ें, तो नया नहीं सोच पाएंगे।</p>	
<p>फायदा बताएं: बांस, ग्राहक परिवार को लाभ बताएं, न कि आइडिया, न कि आइडिया नहीं। फायदा बताते हैं आइडिया नहीं।</p>	<p>खुद से पूछें: हर महीने देखें क्या बेहतर किया? एक छोटा सुधार भी हर महीने आपके आगे बढ़ाता है।</p>		

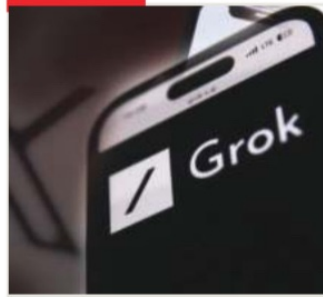
‘गोक की व्यापक समीक्षा करे एक्स’

आशिष आर्यन
नई दिल्ली, 2 जनवरी

सरकार ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) से कहा है कि वह अपने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित चैटबॉट ‘गोक’ की व्यापक ‘तकनीकी, प्रक्रियात्मक और प्रशासनिक’ समीक्षा करे तथा अगले 72 घंटों के भीतर इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय को विस्तृत कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करे।

आईटी मंत्रालय के साइबर लॉ विभाग ने पत्र में कहा कि एक्स को अपने सेवा-नियमों और उपयोगकर्ताओं के लिए एआई उपयोग प्रतिबंधों को लागू करना होगा और ‘कड़े उपाय’ करने होंगे, जैसे कि उन खातों को निलंबित करना, बंद करना या अन्य कार्रवाई करना जो गोक का उपयोग करके महिलाओं और बच्चों की यौन स्पष्टता वाली तस्वीरें बना रहे हैं।

मंत्रालय ने यह भी कहा है कि एक्स को ‘बिना देरी के, पहले से उत्पन्न या प्रसारित की गई सभी सामग्री, जो लागू कानूनों का उल्लंघन करती है, को हटाना या उसकी पहुंच रोकनी चाहिए। उसे यह कार्य आईटी नियम, 2021 में निर्धारित समयसीमा के सख्त अनुपालन में करना होगा, वह भी बिना किसी भी प्रकार से साक्ष्य को प्रभावित किए।’ (शेष पृष्ठ 10 पर)



सरकार की सख्ती

■ सरकार ने कहा कि अगले 72 घंटों के भीतर इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय को विस्तृत कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करे एक्स

■ सूचना प्रसारण मंत्रालय ने सभी सोशल मीडिया कंपनियों को अश्लील सामग्री हटाने या कठोर कदमों का सामना करने की चेतावनी दी थी

Business Standard Page No-1

विनिर्माण 2 साल के निचले स्तर पर

अहोना मुखर्जी
नई दिल्ली, 2 जनवरी

नए ऑर्डर कम होने और सुस्त उत्पादन के कारण भारत के निजी क्षेत्र की विनिर्माण गतिविधियां दिसंबर में सुस्त होकर 24 साल के निचले स्तर पर आ गई हैं।

एसएंडपी ग्लोबल द्वारा संकलित और शुक्रवार को जारी इंडिया मैनुफैक्चरिंग पीएमआई इंडेक्स नवंबर के 56.6 से गिरकर दिसंबर 2025 में 55 पर आ गया। नए ऑर्डर, उत्पादन, रोजगार, आपूर्तिकर्ताओं की डिलिवरी के समय और खरीद सूचकांकों के आंकड़ों से पता चलता है कि विनिर्माण सूचकांक इसके पहले दिसंबर 2023 में 54.9 के निचले स्तर पर पहुंचा था। आंकड़े पिछले माह जारी 58.4 अंक फ्लैश पीएमआई से उल्लेखनीय रूप से कम हैं।

विनिर्माण गतिविधियों के आंकड़े 50 अंक से ऊपर हैं, जिससे विस्तार का पता चलता है। इससे कम आंकड़े संकुचन दर्शाते हैं। समग्र आंकड़े लगातार 50वें महीने विस्तार के क्षेत्र में हैं। एसएंडपी ग्लोबल मार्केट इंटेलिजेंस में एसोसिएट डायरेक्टर पॉलियाना डी लीमा ने कहा, ‘वृद्धि की गति धीमी होने के बावजूद भारत के विनिर्माण उद्योग ने 2025 का समापन बेहतर रहा है। नए व्यवसाय में तेज वृद्धि से कंपनियों की व्यवस्था रह सकती है।



एसएंडपी ग्लोबल

■ पीएमआई इंडेक्स नवंबर के 56.6 से गिरकर दिसंबर 2025 में 55 पर आ गया

■ नए काम में बढ़ोतरी दिसंबर 2023 के बाद सबसे कम दर से हुई

महंगाई का दबाव कम रहने के कारण मांग बढ़ी हुई बनी रह सकती है। नए काम में बढ़ोतरी दिसंबर 2023 के बाद सबसे कम दर से हुई है, जबकि उत्पादन के स्तर का विस्तार अक्टूबर 2022 के बाद सबसे धीमी रफ्तार से हुआ है। कुल बिक्री में गिरावट से भी अंतरराष्ट्रीय ऑर्डरों की मात्रा का पता चलता है, जो 14 माह में सबसे धीमी गति से बढ़ा है।

इनपुट लागत इस दौरान ऐतिहासिक रूप से धीमी रफ्तार से बढ़ी है और उत्पादों का अंतिम मूल्य भी 9 महीने में सबसे धीमी रफ्तार से बढ़ा है।

Business Standard Page No-4

असुरक्षित सफर

ज

ब रक्षक ही भक्षक बन जाए, तो यह व्यवस्था में एक गहरी और चिंताजनक स्थिति को दर्शाता है। इससे आमजन में असुरक्षा, निराशा और अविश्वास की भावना पैदा होना स्वाभाविक है। अगर कानून व्यवस्था का जिम्मा संभालने वाले ही आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने लगें, तो सुरक्षा और न्याय की उम्मीद किससे की जाए! बिहार में एक ऐसी ही चौंका देने वाली घटना सामने आई है, जिसमें करीब डेढ़ करोड़ रुपए के सोने की लूट की जांच कर रहा राजकीय रेलवे पुलिस का अधिकारी ही मामले में संलिप्त पाया गया। इस बात का खुलासा तब हुआ, जब पटना रेलवे पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में विशेष जांच दल ने गहन तहकीकात की। हैरत की बात है कि जिस अधिकारी को रेल में सफर के दौरान यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी दी गई थी, वही अपराधियों की जमात में खड़ा पाया गया। ऐसे में यह सवाल और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि व्यवस्था में पनप रहे इस तरह के भ्रष्टाचार और अपराध के दरख्तों को खाद-पानी कहां से मिल रहा है?

गौरतलब है कि कोलकाता स्थित एक स्वर्ण कारोबारी के कर्मचारी ने बिहार के गया रेल थाने में शिकायत दर्ज कराई थी कि गत वर्ष नवंबर में हावड़ा-बीकानेर एक्सप्रेस रेल में यात्रा के दौरान गया स्टेशन पर पुलिस वर्दी में चार लोग ट्रेन में सवार हुए। पहले उन्होंने सोने को लेकर उनसे पूछताछ की और बाद में वे एक किलो सोने के बिस्कुट लेकर फरार हो गए। इसके बाद गया रेल थाना प्रभारी ने जांच शुरू की। जाहिर है कि जब लूट में शामिल पुलिस अधिकारी ही जांच कर रहा हो, तो सच सामने आने की उम्मीद कैसे की जा सकती है। भारतीय रेल आए दिन अलग-अलग बहाने से किराए में बढ़ोतरी करने या अधिक पैसे वसूलने में तो कोई संकोच नहीं करती, लेकिन यात्रियों के सुरक्षित और सुविधाजनक सफर को सुनिश्चित करने में शायद उसकी कोई रुचि नहीं है। विडंबना यह है कि यात्रियों के सामने आपराधिक तत्त्वों के अलावा अब वैसे लोगों से भी खुद को बचाने की चुनौती है, जो उनकी सुरक्षा के लिए ही तैनात किए जाते हैं।

पीड़ा के स्तर

रेखा शाह आरबी

क

ई बार लोग कहते हैं कि हम आपको समझते हैं... आपकी पीड़ा, आपके दुख और तकलीफ, भावनाओं को समझते हैं। ऐसे शब्द अक्सर सुनने को मिल जाते हैं।

कई बार हमारे बहुत करीबी, रिश्ते-नातेदार अपनी निकटता दिखाने के लिए कहते हैं कि हम आपके दुख, आपकी पीड़ा को समझते हैं। उनका यह कहना वास्तव में मात्र जुबानी जमा खर्च होता है, जिसे कोई भी किसी को सांत्वना देने के लिए आमतौर पर औपचारिकता निभाने की खातिर कह देता है। हालांकि ऐसा कहना एक तरह की कठोरता है, लेकिन ज्यादातर मामलों में सच यही है। अगर हम एक इंसान के रूप में थोड़े-से संवेदनशील हैं, तो हम किसी के दुख के प्रति भावुक हो सकते हैं। हो सकता है कि उसके दुख से हम थोड़े बहुत दुखी भी हो जाएं, पर पूरी तरह किसी के दुख, पीड़ा, मर्म को समझ पाना लगभग असंभव है। एक हद तक अगर संभव है भी, तो यह तब हो पाता है, जब कोई व्यक्ति खुद उसी के बराबर की पीड़ा से गुजरा होता है।

किसी को समझना और किसी की पीड़ा की गहराई में उतरना क्या आसान है? इंसान का दुख एक अंधेरे गहरे कुएं की तरह होता है। उस अंधेरे और गहराई में कितनी तहें हैं, यह कोई नहीं जानता है। बाहर से देखने पर कुछ और लगता है और अंदर उतरने पर कुछ और भी हो सकता है। और जब कोई चीज दिखाई ही नहीं दे रही, तो हम सिर्फ अंदाजा लगा सकते हैं, सौ फीसद क्या है, यह हम नहीं बता सकते। ऐसा भी नहीं है कि हम किसी के दुख के कुएं में कूद जाएं। जाने के लिए भावनाओं की एक पूरी नदी पार करनी पड़ती है। अपनत्व की सीढ़ी बनानी पड़ती है। संवेदना से अपनी हृदय-भूमि को सिंचित करना पड़ता है। उसके बाद एक-एक सीढ़ी उतरना पड़ता है। वह भी बेहद संभल-संभल कर, तब जाकर कहीं नीचे तक हम पहुंचने की राह मिल पाती है। अगर हम जरा भी जल्दबाजी और अनमनापन दिखाते हैं, तो आधे रास्ते से वह सीढ़ियां गायब हो जा सकती हैं और वहाँ से हमें वापस आना पड़ जा सकता है।

जुबान भले ही कुछ भी कहे, लेकिन वास्तव में देखा जाए, तो ऐसा बिल्कुल भी संभव नहीं है कि कोई किसी की पीड़ा को पूरी तरह से समझ ले। जिस रूप में व्यक्ति पीड़ा को भोग रहा है, उसी रूप में, उन्हीं भावनाओं के साथ कोई महसूस कर ले। क्या यह संभव है? अपने पांव पर चलने वाला पूरी तरह स्वस्थ इंसान साल भर से बिस्तर पर अशक्त रूप से पड़े हुए किसी इंसान के मन के दुख को किस तरह समझ सकता है। पूरी तरह

स्वस्थ तो छोड़ दिया जाए, जो उस अवस्था से गुजर रहा है, वह व्यक्ति भी उस व्यक्ति की पीड़ा को सौ फीसद नहीं समझ सकता है, क्योंकि हो सकता है कि दोनों की परिस्थितियां अलग हों। हम किसी की पीड़ा का मात्र कुछ अंश ही समझ सकते हैं, पूरी तरह समझना असंभव है, क्योंकि जो व्यक्ति पीड़ा भोग रहा है, वह पूरे समय इस दुख में जीता है। और जो व्यक्ति समझने का दावा कर रहा है कि उसकी पीड़ा को समझ रहा है, वह मात्र उस व्यक्ति के समंदर-से दुख के मात्र एक कतरे को समझने का प्रयास कर रहा है। यह कतई संभव नहीं है कि हम एक पूरी किताब को एक पन्ना पढ़कर समझ जाएं। किसी के दुख को पूरी तरह या पर्याप्त गहराई के साथ समझने के लिए उस किताब को पूरा पढ़ना पड़ेगा। उसी परिस्थिति में पढ़ना पड़ेगा और उसी अवस्था, भावना में पढ़ना पड़ेगा और उतना ही समय लेना पड़ेगा। तब जाकर हो सकता है कि कहीं हम किसी व्यक्ति की पीड़ा की तहों में पहुंच पाएं।

इसीलिए यह संभव नहीं है कि हम कितने भी संवेदनशील व्यक्ति हों, किसी के दुख को समझ सकते हैं। दुख-सुख दरअसल परिस्थिति, भावनाओं, अपनों के व्यवहार के अलावा भी बहुत सारी बातों के साथ मिलकर संगति करता है। एक पति-पत्नी बरसों साथ रहते हैं। एक खुशहाल परिवार के रूप में रहते हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि दोनों एक दूसरे की पीड़ा को पूरी तरह समझते हों। अक्सर हम लोगों को उतना ही समझते हैं, जितनी हमें आवश्यकता होती है। उसके बाद अन्यथा के रूप में छोड़ देते हैं। हर इंसान को हर रिश्ते में सबसे बड़ा दुख या फिर शिकायत यही होती है कि सामने वाला हमें समझ नहीं रहा है। इसलिए जितना जल्दी हो सके, अपने आप को यह बात समझना चाहिए कि हमारे दुख को सौ फीसद कोई नहीं समझ सकता, क्योंकि बहुत बार हम खुद नहीं समझ सकते हैं कि हम क्या चाहते हैं, क्योंकि दुख भी रूप बदलता रहता है।

यों भी, यह हम दूसरों से कैसे अपेक्षा कर सकते हैं कि दूसरा एकदम हमारे मन के अनुरूप हमारी बात, भावना, पीड़ा को समझ पाएगा। अगर कोई हमारी बातों को, भावनाओं को कुछ हद तक भी समझ जाता है, तो यह मान लेना चाहिए कि उस व्यक्ति को हमारी परवाह, हमसे लगाव और प्रेम है। उसे रिश्ते को प्रसन्नता के साथ जीने का प्रयास करना चाहिए। किसी की भावना, पीड़ा या दुख, किसी की समझ, सोच को समझना दरअसल एक जटिल, बेहद थकाने वाला काम है। भागती-दौड़ती इस दुनिया में यह उम्मीद करने की जरूरत नहीं है कि कोई हमें पूरी तरह समझ पाएगा, क्योंकि यह उम्मीद पालना ही एक नए दुख को जन्म दे देगा। और मन में कड़वाहट उपजेगा, वह अलग दुख होगा। थोड़े को ही पूरा मानना हमें सहज और सरल बनाएगा, जो सुखी मन से जीने के लिए जरूरी है।

दुनिया मेरे आगे

कि

सी को समझना और पीड़ा की गहराई में उतरना

क्या आसान है? इंसान का दुख एक अंधेरे गहरे कुएं की तरह होता है। उस अंधेरे और गहराई में कितनी तहें हैं, यह कोई नहीं जानता है। बाहर से देखने पर कुछ और लगता है और अंदर उतरने पर कुछ और भी हो सकता है।

कोहरे की मुश्किल और सड़क सुरक्षा

इसमें दोराय नहीं कि कोहरा सड़क सुरक्षा को प्रभावित करने वाली सबसे भ्रामक और खतरनाक परिस्थितियों में से एक है। हर वर्ष सर्दी में घना कोहरा भीषण हादसों का कारण बनता है। ऐसी स्थिति में सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करना अब एक तकनीकी जरूरत बन चुकी है।

नृपेंद्र अभिषेक नृप

कोहरा सड़क सुरक्षा को प्रभावित करने वाली सबसे भ्रामक और खतरनाक प्राकृतिक परिस्थितियों में से एक है। भारी वर्षा या तूफान की तरह कोहरा शोर या तीव्रता के साथ नहीं आता, बल्कि यह चुपचाप वातावरण को अपनी चादर में ढक लेता है। यह दृश्यता को अत्यधिक कम कर देता है, दूरी के आकलन में भ्रम पैदा करता है और मनुष्य की प्रतिक्रिया क्षमता को धीमा कर देता है। हर वर्ष, विशेषकर उत्तर भारत में सर्दी के महीनों के दौरान घना कोहरा राष्ट्रीय राजमार्गों, शहरी सड़कों और ग्रामीण मार्गों पर भीषण हादसों का कारण बनता है। कई वाहनों की एक साथ टक्कर, खड़े वाहनों से टक्कर, तथा बसों, ट्रकों और निजी वाहनों से जुड़ी दुर्घटनाएं अब लगभग रोजमर्रा की बात हो गई हैं। ऐसे में कोहरे के दौरान सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करना एक तकनीकी जरूरत बन चुकी है।

कोहरे से होने वाली दुर्घटनाओं के घातक होने का एक मुख्य कारण दृश्य संकेतों का अचानक गायब हो जाना है। चालक वाहन चलते समय दूरी, गति और सड़क की दिशा का अनुमान लगाने के लिए मुख्य रूप से अपनी दृष्टि पर निर्भर रहता है। जब कोहरे के कारण दृश्यता कुछ मीटर तक सीमित हो जाती है, तो अनुभवी चालक भी समय पर प्रतिक्रिया देने में असमर्थ हो जाते हैं। राष्ट्रीय राजमार्गों पर तेज गति से चलने वाले वाहन अक्सर धीमी गति से चल रहे या सड़क किनारे खड़े वाहनों, अवरोधकों या पैदल यात्रियों से टकरा जाते हैं। ऐसी सूरत में पीछे से आने वाले चालक आगे की स्थिति को समझ नहीं देख पाते, जिससे श्रृंखलाबद्ध टक्कर होती है। रात के समय यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है, जब अंधेरा और कोहरा मिलकर वाहनों की साधारण रोशनी को निष्प्रभावी बना देते हैं और कई बार प्रकाश का परावर्तन दृश्यता को और खराब कर देता है।

इस संकट में तकनीकी कर्मियों भी हादसों के लिए जिम्मेदार हैं। कई राष्ट्रीय राजमार्गों सहित देश की अधिकांश सड़कों पर दृश्यता बढ़ाने वाली आधुनिक संरचनाओं का अभाव है। सड़क पर बनी परावर्तक रेखाएं उचित रखरखाव के अभाव में जल्दी फीकी पड़ जाती हैं। संकेतक बोर्ड या तो परावर्तक नहीं होते या धूल, मिट्टी और झाड़ियों से ढके रहते हैं। हालांकि, नियमों के अनुसार वाहनों में 'फग लैंप' होना चाहिए, लेकिन बड़ी संख्या में वाहनों में ये या तो लगे नहीं होते या काम नहीं करते हैं। जहां तकनीक उपलब्ध है, वहां भी उसका प्रभावी क्रियान्वयन, नियमित निगरानी और चालकों में जागरूकता की भारी कमी देखने को मिलती है। उपलब्ध समाधानों और जमीनी हकीकत के बीच की यही खाई लगातार लोगों को जान ले रही है।

आधुनिक तकनीक कोहरे से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए कई प्रभावी उपाय प्रदान करती है। 'इंटेलिजेंट ट्रैफ़िग सिस्टम' (आईटीएस) इस दिशा में क्रांतिकारी भूमिका निभा सकता है। ये प्रणालियां सेंसर, कैमरे और वास्तविक समय के आंकड़ों की सहायता से मौसम तथा यातायात की स्थिति पर लगातार निगरानी रखती हैं। परिवर्तनीय संदेश संकेतक बोर्ड चालकों को आगे कोहरे की तीव्रता की जानकारी दे सकते हैं, गति कम करने की सलाह दे सकते हैं और दुर्घटना या जाम की चेतावनी भी दे सकते हैं। विकसित देशों में व्यस्ततम राजमार्गों पर कोहरे की सभ्यता का पता लगाने वाले सेंसर लगाए गए हैं, जो अपने आप



चेतावनी संकेत सक्रिय कर देते हैं और वाहनों की गति सीमा को समायोजित कर देते हैं। यदि भारत के कोहरा-प्रभावित राजमार्गों पर ऐसी प्रणालियां स्थापित की जाएं, तो दुर्घटनाओं में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है।

वाहन-आधारित तकनीकें भी उन्नी ही महत्वपूर्ण हैं। 'एडवॉर्ड ड्राइवर

जन-जागरूकता और सामुदायिक सहभागिता आवश्यक है। नागरिकों को यह समझना होगा कि सड़क सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक साझा दायित्व है। जनसंचार माध्यमों, सामाजिक मंचों और स्थानीय अभियानों के माध्यम से लोगों को कोहरे के खतरों तथा सावधानी बरतने के महत्व के बारे में शिक्षित किया जा सकता है। यात्रा से पहले मौसम की जानकारी लेना, घने कोहरे में अनावश्यक रात्रि यात्रा से बचना और वाहन की तकनीकी स्थिति सुनिश्चित करना जैसे छोटे कदम भी कई जिंदगियां बचा सकते हैं। स्पष्ट ईंधन, उत्सर्जन नियंत्रण और सतत शहरी नियोजन के माध्यम से प्रदूषण कम करना भी दृश्यता सुधारने में सहायक हो सकता है।

असिस्टेड सिस्टम' जैसे-स्वतः आपातकालीन ब्रेकिंग, लेन से बाहर जाने की चेतावनी और अनुकूल कूज कंट्रोल, कम दृश्यता और धीमी मानवीय प्रतिक्रिया

की भरपाई कर सकते हैं। इंजन-रेड कैमरे और थर्मल इमेजिंग प्रणाली, जो विदेश में महंगे वाहनों में पहले से उपयोग हो रहे हैं, वे दृश्य सीमा से परे वाद्याओं और नींवित प्राणियों का संकेत दे सकते हैं। हालांकि, वर्तमान में इस तरह की तकनीक महंगी है, लेकिन सरकारी प्रोत्साहन और चरणबद्ध नीति के माध्यम से इन्हें टुकों और बसों जैसे वाणिज्यिक वाहनों में लागू किया जा सकता है, जो अक्सर बड़ी दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। सड़क की रूपरेखा और आधारभूत संरचना को भी जलवायु की वास्तविकताओं के अनुरूप विकसित करना होगा।

राजमार्गों की योजना बनाते समय कोहरा-प्रवण क्षेत्रों को विशेष ध्यान में रखना आवश्यक है। उचित जल निकासी, सड़क किनारे परावर्तक संकेत, प्रकाशित लेन चिह्न और 'रेव्लूटिड' कम दृश्यता में भी चालकों को साफ संकेत प्रदान कर सकते हैं। सीर ऊर्जा से चलने वाले एलईडी स्टड, जिन्हें सड़क में लगाया जाता है, वे कोहरा भरी रातों में लेन और मोड़ों को स्पष्ट रूप से दर्शा सकते हैं। ओवरफ्रिज, अंडरपास और दुर्घटना-प्रवण हिस्सों पर बेहतर रोशनी तथा स्पष्ट संकेतक अनिवार्य होने चाहिए। बुनियादी ढांचे की योजना में मौसम संबंधी आंकड़ों को शामिल करना होगा, कोहरे को एक अतिरिक्त मौसमी समस्या मानकर छोड़ देने से परसला हल नहीं होगा। मानवीय व्यवहार इस पूरी समस्या में निर्णायक भूमिका निभाता है। कई चालक कोहरे में भी असुरक्षित गति से वाहन चलाते हैं, वे या तो खतरों को कम आंकते हैं या अपनी क्षमता को अधिक समझते हैं। चालक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कोहरे में सुरक्षित तरीके से वाहन चलाने की विशेष तकनीकों पर जोर दिया जाना चाहिए।

राजमार्गों पर अवैध रूप से खड़े वाहनों, सड़क किनारे अतिक्रमण और अनधिकृत ढाबों की समस्या का समाधान भी जरूरी है, क्योंकि ये अचानक रुकावटें पैदा करते हैं और कोहरे में जानलेवा साबित होते हैं। ऐसे में कोहरे से जुड़ी सड़क सुरक्षा के लिए एकीकृत योजना, डेटा साझा करने और समन्वित प्रतिक्रिया तंत्र की आवश्यकता है। आपातकालीन सेवाओं को हादसों से निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए, जिसमें एंबुलेंस, फ़ोन और चिकित्सा सुविधाओं की त्वरित उपलब्धता शामिल हो। बचाव कार्य में देरी अक्सर उन दुर्घटनाओं को भी घातक बना देती है, जिनमें लोगों की जान बचाई जा सकती है।

जन-जागरूकता और सामुदायिक सहभागिता भी उन्नी ही आवश्यक है। नागरिकों को यह समझना होगा कि सड़क सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक साझा दायित्व है। जनसंचार माध्यमों, सामाजिक मंचों और स्थानीय अभियानों के माध्यम से लोगों को कोहरे के खतरों और सावधानी बरतने के महत्व के बारे में शिक्षित किया जा सकता है। यात्रा से पहले मौसम की जानकारी लेना, घने कोहरे में अनावश्यक रात्रि यात्रा से बचना और वाहन की तकनीकी स्थिति सुनिश्चित करना जैसे छोटे कदम भी कई जिंदगियां बचा सकते हैं। वायु प्रदूषण कोहरा घना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे दृश्यता और भी कम हो जाती है। स्वच्छ ईंधन, उत्सर्जन नियंत्रण और सतत शहरी नियोजन के माध्यम से प्रदूषण कम करना दृश्यता सुधारने में सहायक हो सकता है। कोहरे से होने वाली सड़क दुर्घटनाएं प्रकृति की देन नहीं हैं, बल्कि तकनीक को अपनाने में कमी, आधारभूत संरचना की कमजोर योजना, ढीले प्रवर्तन और जन-जागरूकता के अभाव का परिणाम है। कोहरे में दृश्यता बढ़ाना एक बहुआयामी चुनौती है, जिसके लिए तकनीकी नवाचार, सशक्त शासन, जिम्मेदार तरीके से वाहन चलाना और सामाजिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। प्रकृति को नियंत्रित करना संभव नहीं है, लेकिन उसके खतरों का प्रबंधन अवश्य किया जा सकता है।

कानूनी अधिकार बने स्वच्छ पानी

भारत ने अपने पर्यावरणीय संकटों को मापना सीख लिया है। वायु प्रदूषण को एयर क्वालिटी इंडेक्स के जरिये रोजाना आंका जाता है। हीटवेव और बाढ़ सार्वजनिक विमर्श पर हावी रहते हैं, लेकिन जब पीने का पानी जानलेवा बन जाता है, तब प्रतिक्रिया खतरनाक रूप से देर से, सीमित और अल्पकालिक होती है। इंदौर के भागीरथपुरा क्षेत्र में दूषित पेयजल से हुई हालिया मौतें कोई अपवाद नहीं हैं, बल्कि एक गहरी प्रशासनिक विफलता का लक्षण हैं। इंदौर की घटना देश के अलग-अलग हिस्सों में घट चुकी समान त्रासदियों की कड़ी है। गुजरात के महिसगर जिले में हाल में पीलिया का प्रकोप बोरवेल और नगरपालिका जलस्रोतों के दूषित होने से जुड़ा पाया गया। तमिलनाडु के तिरुवल्लूर में प्रदूषित नल जल पीने से लोगों को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। ओडिशा के संबलपुर में 2014 के हेपेटाइटिस प्रकोप में लगभग 3,900 से अधिक लोग संक्रमित हुए और लगभग 36 लोगों की मौत हुई थी।

भारत में असुरक्षित पेयजल कोई स्थानीय चूक नहीं, बल्कि बार-बार उभरने वाला संकट है। इस संकट का पैमाना भयावह है। 2005 से 2022 के बीच भारत में तीव्र दस्त, टाइफाइड, वायरल हेपेटाइटिस और हैजा जैसी प्रमुख जलजनित बीमारियों के 20.98 करोड़ से अधिक मामले दर्ज किए गए, जिनमें 50,000 से अधिक मौतें हुईं। इसके अलावा नीति आयोग के कंपोजिट वाटर मैनेजमेंट इंडेक्स के अनुसार हर साल लगभग दो लाख लोग सुरक्षित पेयजल की अपर्याप्त उपलब्धता के कारण अपनी जान गंवाते हैं। इसके बावजूद जल गुणवत्ता कभी भी उतनी राजनीतिक प्राथमिकता नहीं बन पाती, जितनी अन्य पर्यावरणीय संकेतक बनते हैं। वैश्विक जल गुणवत्ता सूचकांक में भारत 122 देशों में 120वें स्थान पर है। अनुमान है कि देश के लगभग 70 प्रतिशत जलस्रोत दूषित हैं। दूषित पानी से होने वाली बीमारियां काम के दिनों की हानि, बढ़ते चिकित्सा खर्च और श्रम उत्पादकता में गिरावट का दुष्प्रकार पैदा करती हैं। जल आपूर्ति एवं स्वच्छता मंत्रालय के अनुसार, इससे 3.77 करोड़ लोग प्रभावित होते हैं और हर साल करीब 7.3



अनुराग ललित जैन

भारत में असुरक्षित पेयजल कोई स्थानीय चूक नहीं, बल्कि बार-बार उभरने वाला संकट है



इंदौर में दूषित पेयजल ने ली जान ● प्रे

करोड़ कार्यदिवसों का नुकसान होता है। इन प्रकोपों की जड़ अक्सर जलस्रोत नहीं, बल्कि वह यात्रा होती है, जो पानी स्रोत से नल तक तय करता है। कई शहरों में रिपोर्टें बताती हैं कि सीवर का पानी पेयजल पाइपलाइनों में मिल जाता है। यह शहरी शासन की एक जानी-पहचानी विफलता है। नगरपालिका विभाग अक्सर एक-दूसरे से कटकर काम करते हैं। सड़क निर्माण एजेंसियां बिना जल और सीवरेज विभागों से समन्वय किए खुदाई कर देती हैं। भूमिगत उपयोगिताओं के सटीक और साझा नक्शों के अभाव में भारी मशीनें पेयजल पाइपों को तोड़ देती हैं और सीवर लाइनों को क्षतिग्रस्त कर देती हैं। इससे सीवर का गंदा पानी जल पाइपों में चला जाता है और समस्या तब सामने आती है, जब तक जनहानि हो चुकी होती है। यह समन्वयहीनता शहरी अवसंरचना कार्यक्रमों के क्रियान्वयन से और गहरी हो जाती है।

कई बार नई पाइपलाइनें बिछा दी जाती हैं, जबकि नीचे मौजूद पुरानी, रिसती और जर्जर नेटवर्क व्यवस्था पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। भारत शहरीकरण को तो बढ़ावा दे रहा है, लेकिन इसमें सुरक्षा प्रोटोकाल, निरंतर निगरानी

और संस्थागत जवाबदेही को अनदेखा कर दिया है। जल क्षेत्र की सबसे बड़ी कमी स्वतंत्र नियमन का अभाव है। बिजली क्षेत्र में राज्य विद्युत नियामक आयोग बनाए गए, ताकि सेवा प्रदाय और नियमन को अलग किया जा सके और मानकों का प्रवर्तन हो सके। शहरी जल आपूर्ति में ऐसी कोई समान व्यवस्था नहीं है। नगरपालिका ही पानी देती है, वही जांच करती है और वही तय करती है कि सब ठीक है या नहीं? यानी संभावित प्रदूषक और नियामक अक्सर एक ही इकाई होते हैं। जब कोई स्वतंत्र नियामक नहीं होता तो न तो नियम सख्ती से लागू होते हैं और न ही गलती पर सजा मिलती है। पानी की जांच के नतीजे जनता से छिपे रहते हैं और प्रदूषण को तब माना जाता है, जब लोग बीमार पड़ने या मरने लगते हैं। इसलिए सरकार पहले से रोकथाम करने के बजाय हादसे के बाद ही मरम्मत करती है। यह नियामक कमजोरी एक कानूनी शून्य से भी जुड़ी है। जहां भारत ने खाद्य का अधिकार जैसे वैधानिक अधिकार सुनिश्चित किए हैं, वहीं सुरक्षित पेयजल अब भी एक 'निहित' अधिकार है, जो संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार की न्यायिक व्याख्या से निकला है, न कि स्पष्ट सेवा मानकों वाले किसी प्रवर्तनीय कानून से।

दूषित पेयजल संकट से निपटने के लिए हादसे के बाद तात्कालिक उपाय करना पर्याप्त नहीं है। जरूरत ऐसी व्यवस्था की है, जो समस्या पैदा होने से पहले ही उसे रोक सके। इसके लिए जमीन के नीचे की पाइपलाइनों का सही नक्शा होना चाहिए, पानी की आपूर्ति करने वालों और उसकी जांच करने वालों को अलग रखा जाना चाहिए और अमृत 2.0 में नल से साफ और सुरक्षित पानी पहुंचाने पर जोर देना होगा। इंदौर की मौतें कोई चूक नहीं, चेतावनी हैं। भारत ने जिस गंभीरता से हवा की गुणवत्ता मापनी सीखी है, अब उसी गंभीरता से उसे अपने पीने के पानी की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। इसे कल्याणकारी अनुग्रह नहीं, बल्कि संवैधानिक दायित्व और बुनियादी आर्थिक आवश्यकता के रूप में देखना होगा।

(लेखक कांग्रेस के अल्पसंख्यक विभाग के उपाध्यक्ष हैं) response@jagran.com

सामाजिक सुरक्षा का सवाल

यह ठीक है कि खाने-पीने की सामग्री के साथ अन्य सामान की डिलीवरी करने वाले अस्थायी कामगारों यानी गिग वर्कर्स की ओर देश का ध्यान गया, लेकिन ऐसा तब हो पाया, जब विपरीत परिस्थितियों में काम करने वाले इन लोगों को हड़ताल करनी पड़ी। गिग वर्कर्स की मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार होना चाहिए, क्योंकि उनकी कार्यदशाएं काफी कठोर हैं। आज जब क्विक कामर्स और फूड डिलीवरी कंपनियों का कारोबार बढ़ता जा रहा है, तब उनके लिए काम की बेहतर दशाएं सुनिश्चित की ही जानी चाहिए। यह संतोषजनक तो है कि केंद्र सरकार गिग वर्कर्स के लिए सामाजिक सुरक्षा का एक प्रस्ताव लेकर आई है, लेकिन बात तब बनेगी, जब इस प्रस्ताव के प्रविधानों को सही तरह लागू करने में सफलता मिलेगी। गिग वर्कर्स की समस्या यह है कि वे जिन कंपनियों के लिए काम करते हैं, उनके वे कर्मचारी नहीं माने जाते। उनके काम के घंटे भी तय नहीं हैं। वे जितने समय काम करते हैं, उतने ही वक्त का उन्हें पैसा मिलता है। उन्हें कभी भी काम से हटाया जा सकता है। चूंकि उनकी स्थिति असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों जैसी है, इसलिए उनकी कार्यदशाओं पर किसी का ध्यान नहीं है। यदि उनके साथ कुछ अनहोनी जाए तो संबंधित कंपनी की जवाबदेही नहीं होती। यह समझा जाना चाहिए कि गिग वर्कर आधारित उद्योग बेहतर नियमन की मांग कर रहा है। गिग वर्कर्स की समस्याएं इसलिए और बढ़ गई हैं, क्योंकि दस मिनट में भी सामान की डिलीवरी करने का चलन जोर पकड़ गया है। इस चलन पर फिर से विचार होना चाहिए, क्योंकि इससे गिग वर्कर्स के साथ दुर्घटनाएं होने का जोखिम बढ़ गया है। कई बार गिग वर्कर शीघ्र सामान पहुंचाने के फेर में ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करते दिखते हैं। निःसंदेह गिग वर्कर बढ़ रहे हैं, लेकिन उन्हें मिलने वाले मेहनताने को आकर्षक नहीं कहा जा सकता। नीति आयोग के अनुसार 2020-21 में जो गिग वर्कर 77 लाख के करीब थे, उनकी संख्या 2029-30 तक 2.35 करोड़ हो जाएगी। ऐसे में सरकार के साथ उन कंपनियों को भी उनकी सुधि लेनी होगी, जिनके लिए वे काम करते हैं। उन्हें केवल सामाजिक सुरक्षा के ही दायरे में नहीं लाया जाना चाहिए, बल्कि ऐसे उपाय भी किए जाने चाहिए, जिससे उनका शोषण न हो सके और वे अपने भरणपोषण लायक आय अर्जित कर सकें। अब जब यह स्पष्ट है कि आने वाले समय में गिग वर्कर्स की संख्या बढ़ती ही जानी है, तब इस पर भी ध्यान दिया जाए कि सामान की डिलीवरी के लिए बैटरी चालित दोपहिया वाहनों का ही उपयोग हो। यह भी समय की मांग है कि गिग वर्कर्स के साथ असंगठित क्षेत्र के अन्य सभी कामगारों के हित की भी चिंता की जाए। यह ठीक नहीं कि लाखों अस्थायी कामगार सामाजिक सुरक्षा के दायरे से बाहर हैं।

पूर्वोत्तर भारत की पीड़ा समझें



तरुण किशोर

यह समग्र हर परिस्थिति में पूर्वोत्तर के लोगों के साथ खड़े खड़े का है। यहाँ के लोगों को अपनेपन का अहसास करना राष्ट्रीय कर्तव्य खेना चाहिए

त्रिपुरा के छात्र एंजेल चकमा को देहरादून में कुछ गुंडों के हमले में मौत की हत्याद्वाराक घटना को पूरे देश में तीव्र प्रतिक्रिया हुई है। पूर्वोत्तर के सामाजिक संगठन, नेता इस घटना से काफी रोष में हैं। इस समय में त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में ही है, क्योंकि मुझे एंजेल चकमा के स्वजनों से मिलना है। इस घटना ने कुछ प्रश्न खड़े किए हैं। कुछ लोग इस घटना पर गिद्ध राजनीति कर दुर्भाग्यपूर्ण शोकांतिका का असम एवं अन्य क्षेत्रों में आसन्न चुनावों के लिए जिस प्रकार उपयोग कर रहे हैं, उससे समाज में विश्व बढ़ने का भय है। मृतक चकमा समाज का हीनहार युवक था। चकमा मूलतः चटगांव निवासी, बौद्ध मतावलंबी एवं शांतिप्रिय लोग हैं। पंडित नेहरू की दुर्नीति के कारण चटगांव को गैर-मुस्लिम, हिंदू, बौद्ध बहल होते हुए भी पूर्वी पाकिस्तान यानी आज के बांग्लादेश में जाने दिया गया। तब हजारों चकमाओं का नरसंहार हुआ। उन्हें शरण के लिए भारत आना

पड़ा, लेकिन भारत के ईसाई बहुल पूर्वोत्तर राज्यों ने उन्हें अस्वीकार कर दिया। मिजोरम के ईसाई छात्र संगठनों ने 1990 के दशक में चकमाओं के घर जलाए और उन्हें त्रिपुरा सीमा के पार धकेल दिया। तब चकमाओं को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सैकड़ों टुक राहत समग्र भेजी थी। आज जो लोग एंजेल चकमा की हत्या को राजनीतिक रूप दे रहे हैं, उन्होंने कभी चकमाओं की विपत्ति समय में सहायता नहीं की। चकमा लोग पूरे भारत में मात्र साढ़े पाँच लाख हैं और मुख्यतः मिजोरम, असम, मेघालय, अरुणाचल, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल में रह रहे हैं। जहाँ वे ईसाई बहुल राज्यों में हैं, वहाँ उनके साथ भेदभाव होता है। उनके क्षेत्रों में सड़कें नहीं, स्कूलों में अध्यापक नहीं हैं। चकमा गाँवों के नाम भी बदले गए हैं। इसलिए वे शिक्षा हेतु अपने बच्चे देहरादून, दिल्ली, बेंगलुरु आदि भेजने पर विवश होते हैं।

पूर्वोत्तर भारत का सबसे मनेरम, प्राकृतिक सुभमा से युक्त वीरों और प्रज्ञावान युवाओं का क्षेत्र है, जिसको राममनोहर लोहिया ने यक्ष प्रदेश कहा था। आठ प्रदेशों की पाँच हजार किमी सीमाएं चीन, तिब्बत, म्यांमार, बांग्लादेश, भूटान और नेपाल से मिलती हैं। सर्वाधिक संख्या में प्रतिबंधित संगठन पूर्वोत्तर राज्यों में सक्रिय हैं। मोदी शासन आने से पूर्व यहाँ असम के अलावा अन्य राज्यों में रेल, हवाई अड्डे नामालूम थे। 2024-25 के बजट में पूर्वोत्तर विकास मंत्रालय का बजट 74.4 प्रतिशत बढ़ाया गया। 2014-15 की तुलना में मोदी शासन में पूर्वोत्तर के लिए कुल बजट 179 प्रतिशत बढ़ाया गया। हवाई अड्डे, राजमार्ग, ईटानगर-



दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस, बेहतर शिक्षा एवं खेल सुविधाएँ, इन सबका अनंत और असीम विस्तार हुआ है, पर इससे भारत के शत्रु तत्व और बोखला गए हैं। पूर्वोत्तर को भारत से अलग करने की षड्यंत्रकारी योजनाएँ ब्रिटिश काल में क्राउन कालोनी के नाम से चलीं। ब्रिटिश काल में ही सादुल्लाह के नेतृत्व में असम की मुस्लिम लोग ने अपील जारी कर युवकों से ज्यादा बच्चे पैदा करने और असम में ज्यादा मुस्लिम भेजने का अभियान चलाया। असम तथा पूर्वोत्तर भारत पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा बने, इसका षड्यंत्र रचा गया।

एंजेल चकमा का परिवार एक देशभक्त और बौद्ध मतावलंबी है। वातावरण के कारण वहाँ कुछ परिवारों में पश्चिमी नाम रखने का अजीब फैशन है। इसलिए माइकल या एंजेल नाम सुनने में आते हैं। यह समय हर परिस्थिति में पूर्वोत्तर के युवाओं के साथ खड़े होने का है और उन्हें अपनेपन का अहसास कराना राष्ट्रीय कर्तव्य होना चाहिए। पूरे भारत के लिए देशभक्ति

अधिकांश राज्यों को कसैटी बने जांबाज सैनिक, विश्व कीर्तिमान बनाने वाले खिलाड़ी, गायक, विज्ञान और आतिथ्य व्यवसाय के अप्रतिम सितारे पूर्वोत्तर ने दिए हैं। उनकी श्रेष्ठ, गहरी निष्ठा भारत के तिरंगे के प्रति इतनी है कि वे हमें देशभक्ति का पाठ सिखा सकते हैं, पर उत्तर भारत से कितने लोग पूर्वोत्तर भारत पर्यटन के लिए जाते हैं? कितने यहाँ के सुंदर स्थानों, महापुरुषों, नदियों और पर्वतों के बारे में सामान्य जानकारी भी रखते हैं? कितने ऐसे हैं, जो यहाँ के कोई त्योहार बता सकें? कितनों को यहाँ के कोई दो नाम सही से बोलन आता होगा?

पूर्वोत्तर केवल सामरिक महत्व का विषय नहीं। यहाँ रक्तबन्धु भारतीय हैं। यहाँ भारत का प्रथम सूर्योदय होता है। यहाँ की वेशभूषा, त्योहार सबसे सुंदर और अत्यंत मनमोहक हैं। यहाँ के छात्र मेधावी भारतीय भविष्य के सजक हैं। वे देश के दुश्मनों से लोहा लेने में अपनी जान की बाजी लगा देते हैं। उनकी भाषाएँ मधुर संगीत के समान हैं। उन्होंने

रानी गइदिन्ल्यू, यू तीरोट (तीरथ) सिंह, मनीराम दीवान जैसे वीर स्वतंत्रता सेनानी दिए। उन्होंने कारगिल संघर्ष से लेकर प्रत्येक भारत रक्षा अभियान में अपने जीवन की आहुतियाँ दी हैं। वे चिंकी, मोमो नहीं, भारत माता के मुकुट मणि हैं, जो नूतन भारत निर्माता हैं। उनके प्रति आत्मीयता का भाव जगे, इसके लिए सभी राज्यों के विद्यालयों में पूर्वोत्तर भारत परिचय पाठ्यक्रम होने चाहिए। जहाँ कहीं पूर्वोत्तर भारत के छात्र बड़ी संख्या में हैं, वहाँ पुलिस का पृथक पूर्वोत्तर प्रकोष्ठ बने, जिसमें पूर्वोत्तर से जुड़ा कोई अधिकारी प्रमुख हो एवं पुलिस तथा प्रशासनिक अधिकारियों को पूर्वोत्तर को सम्यक जानकारी देने का अभ्यास बर्ग बने। मसूरि स्थित लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक संस्थान में पूर्वोत्तर भारत पर विशेष पाठ्यक्रम हो एवं नवीन अधिकारियों को दो माह का पूर्वोत्तर भ्रमण कराया जाए। सबसे बड़ी बात अपने परिवारों में माता-पिता बच्चों के साथ पूर्वोत्तर की चर्चा करें और छुट्टियाँ मलेशिया, सिंगापुर या यूरोप में नहीं मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मेघालय में मनाने का मन बनाएं। राष्ट्रीय एकता भाषणों अथवा बजट से नहीं, हृदय की उन्मा और पारस्परिक बंधुता के धारों से बूनी जाती हैं। नस्लीय हमलों की शब्दावली इस एकता वस्त्र को तार-तार करती है। एंजेल चकमा के हत्यारों को शीघ्र कठोर दंड मिले और घृणित मानवता विरोधी अपराधों को पुनरावृत्ति न हो, यही उस हीनहार छात्र की सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(लेखक बरिष्ठ स्तम्भकार हैं।
response@agran.com)

